bible educational services

शिक्षक केलिए दिशा-निर्देश

बाइबल टाइम लेवल 1 & 2

B सीरीज़

पाठ 7-12

www.besweb.com

शिक्षक केलिए दिशा- निर्देश।

यह दिशा-निर्देश उन शिक्षकों केलिए प्रकाशित किए है जो बाइबल टाइम सिखाते है। इस पुस्तिका को लेवल 3 लगभग 11-13 के आयु के बच्छो को पठाने में इस्तमाल कर सकते है।

हर एक टिचिन्ग गाइड में वही बाइबल पद का अनुकरण किया है जो बाइबल टाइम पाठ में दिए गए है। बाइबल टाइम पाठ और गाइडलाइन्स साप्ताहिक आधार पर उपयोग करने केलिए बनाया गया है। आप्रैल के पाठ क्रिस्मस से सम्बन्धित है।

कई क्षेत्रों में A4 पाठ और दूसरे क्षेत्रों में A5 पुस्तिका को जिसमे 24 पाठ शामिल है असका उपयोग करते है। आम तौर पर शिक्षक A4 मासिक पाठ का वितरण करेंगे ओर एक हफ्तें में एक पाठ को विध्यालय, गिरिजाघर, या अपने घर ले जाकर पूरा करके वापस लौटाना चाहिए। हर महीने के अन्त में शिक्षक पाठ को इकट्ठा करके जाँचने के बाद जल्द ही लौटाना चाहिए।

आदर्शरूप में पुस्तिका इस्तमाल करते वक्त सत्र के अन्त में जाँच करने केलिए इकट्ठा करते है। हम समझ सकते है कि कई परिस्थितियों में यह असम्भव है। ऐसे स्थिति में पुस्तिका को कक्षा के दुसरे बच्चों में वितरण करके उन से जाँच करवाया जा सकता है। पुस्तिका के पीछे हर महीने का अन्क लिखने और बच्चों की प्रगति के बारे में टिप्पणी लिखने का स्थान दिए गए है। एक प्रमाण पत्र भी है जिसे अलग करके छः महीनों में प्राप्त किए कुल अन्क लिखकर बच्चों को देने है।

शिक्षक केलिए तैयारी

हम आदेशात्मक नही होने चाहते जिसकी वजह से शिक्षक को अपने विचारों और तरीको से सिखाने का अवसर न मिले। यह बाइबल टाइम सिखाने केलिए सिर्फ एक सूझाव है।

- **कहानी से सुपरिचित होना** - शिक्षकों को बाइबल कहानियों और उससे जुडे बाइबल टाइम पाठ से अच्छी तरह से सुपरिचित होना चाहिए। शिक्षक को पहले पाठ पूरा करना चाहिए। हर एक पाठ की दिशा-निर्देशों को ध्यान से पढकर नियोजन सहायता के रूप में भी इस्ततमाल करना चाहिए।

- **विषय को समझना** -हर एक पाठ के आरम्भ में अपने यह वाक्य देखा होगा - "हम सीख रहे हे कि" उसके बाद सीखने के दो उदेश्य भी दिए गए है जो हमे उम्मीद है कि शिक्षक के प्रस्तुति और बच्चे बाइलब टाइम को पूरा करने पर उन्हे समझ आऐंगे। सीखने का पहला उदेश्य है विषय के बारे में जान प्राप्त करना और दूसरा उदेश्य है बच्चे को इस जान के बारे में सोचने, प्रयोग करके अनुक्रिया देने केलिए प्रोत्साहन देना। यह निर्देशन पाठ में दिए गए मुख्य विषय सत्य का सूक्षम वक्तत्य है। इसे शिक्षक अपने पढाने और सीखने के अपने व्यक्तिगत मूल्यान्कन केलिए उपयोग कर सकते है।

- **परिचय कराना** - हर पाठ के आरम्भ में उन परिस्थितियों में बच्चों के अपने अनुभव के बारे में पूछकर शुरु करना चाहिए। बच्चों को पाठ का परिचय कराने केलिए कई तरीको का सुझाव दिए गए है। जिसके सहायता से कहानी की प्रारम्भ के बारे में बच्चे सम्वातात्मक चर्च कर सकेंगे।

- **पढाना**- कहानी की मुख्य सारांश हमने दिए है। हम यह नही चाहते की पढाते वक्त शिक्षक इसे देखे। हम चाहते है की शिक्षक इस पाठ से इतना परिचित हो ताकि मनेरन्जक और प्रेरणापद तरीके से बच्चों को वह सीखा पाऐंगे। शिक्षक यह चाहेंगे की बच्चे कहानी की मुख्य पाठ को समझे और उस कहानी को सीखने के बाद अनुक्रिया दे। कई प्रधान व्यख्यों को हम तिरछे अक्षरों में लिखे है।

- **सीखना** -हर एक कहानी में एक मुख्य पद दिए गए है। कई जगह दो पद दिए है। हम चाहते है की बच्चों को अक्सर मुख्य पद याद दिलाते रहे ताकि उन्हे बाइबल पदों के बारे में जान प्राप्त हो।

- **पूरा करे** - एक विध्यालय कि माहोल में बच्चो की सामर्थ्य और शिक्षक की तरह से दिए जाने वाले मदद के बारे में हमे पता होता है। कई बच्चों केलिए ज़रूरी है की शिक्षक उन्हे पाठ पढ के सुनाए। अन्य बच्चों स्वयं पढ सकते है। दोनों हाल में यह अच्छा होगा अगर बच्चों का ध्यान हम सवालों से सम्भन्धित निर्देशों के और खीच सके। अगर आप स्कूल से बाहर बाइबल टाइम सीखा रहे हो तो यह बहुत ज़रूरी है कि आप मदद केलिए मौजूद हो ताकि बच्चों को यह न लगे की यह एक बहुत ही मुश्किल काम या परीक्षा है। पढाते वक्त उसे मज़ेदार बनाना प्रोत्साहित करना और तारीफ करना अनिवार्य है।

- **याद करना**- पाठ को दोहराते वक्त पहेली या अभिनय द्वारा उसे मनोरंज़क बनाए ताकि बच्चों को वह हमेशा याद रहे।

1. मुख्य पद को सिखाना

पद को कागज़ या बोर्ड में लिखे और जैसे बच्चे उसे दोहरराते है पद से एक-एक पद करके निकाले ताकि अन्त में पूरा पद को निकाल दिया जाए और बच्चे उन्हे बिना देखे दोहराए।

2. मुख्य पद को परिचय कराने केलिए

A. बच्चों को दो झुण्ड में डालेः एक झुण्ड को कई अक्षर लिखे हुए परचियाँ दे और दुसरे झुण्ड को खाली परचे। बच्चे आपस में मिलकर उसे पूरा करे और सीखे।

B. सबसे पहले जो बच्चा बाइबल में यह पद ढूँढे वह जोर से उसे पढे।

समय योजना

क्रमः हर पाठ केलिए हम एक ही क्रम दिए है। लेकिन शिक्षक चाहे तो इच्छा अनुसार बदल सकते है।

1. प्रस्तुतीकरण और कहानी को सुनाना - लगभग 15 मिनट
2. मुख्य पद को पढाना - 5-10 मिनट
3. कार्य-पत्र को पूरा करना - 20 मिनट
4. सवाल-जवाब और दूसरे क्रियाकलाप - 5-10 मिनट

हमेशा यह कहावत याद रकनाः

"मुझे सुनाईए, मैं भूल सकता हूँ,
'मुझे दिखाईए, मैं याद रखूँगा,
मुझे शामिल करे, मैं सीख लूँगा।"

बाइबल टाइम पाठ्यक्रम

	लेवल 0 (प्री स्कूल) लेवल 1 (उम्र 5-7) लेवल 2 (उम्र 8-10)	लेवल 3 (उम्र 11-13)	लेवल 4 (उम्र 14+)
सीरीज़ A	1. सृष्टी 2. नूह 3. पतरस 4. पतरस- क्रूस 5. अब्राहम 6. अब्राहम 7. पतरस 8. पतरस 9. याकूब 10. प्रथम ईसाई 11. पौलूस 12. क्रिसमस की कहानी	1. सृष्टी 2. नूह 3. पतरस 4. पतरस- क्रूस 5. पतरस 6. अब्राहम 7. याकूब 8. प्रार्थना 9. पौलूस 10. पौलूस 11. पौलूस 12. क्रिसमस की कहानी	1. सृष्टी और पाप 2. उत्पत्ति 3. पतरस 4. पतरस- क्रूस 5. पतरस 6. अब्राहम 7. याकूब 8. मसीही जीवन 9. पौलूस 10. पौलूस 11. पौलूस 12. क्रिसमस की कहानी
सीरीज़ B	1. मसीह का प्रारम्भीक जीवनकाल 2. अलौकिक कर्म 3. बैतनिय्याह 4. क्रूस 5. दृष्टान्त 6. यूसुफ 7. यूसुफ 8. यीशु ने मिले लोग 9. मूसा 10. मूसा 11. मूसा 12. क्रिसमस की कहानी	1. दृष्टान्त 2. अलौकिक कर्म 3. बैतनिय्याह 4. क्रूस 5. प्रथम ईसाई 6. यूसुफ 7. यूसुफ 8. सुसमाचार के लेखक 9. मूसा 10. मूसा 11. मूसा 12. क्रिसमस की कहानी	1. दृष्टान्त 2. अलौकिक कर्म 3. बैतनिय्याह 4. क्रूस 5. प्रथम ईसाई 6. याकूब और परिवार 7. यूसुफ 8 प्रेरितों 2:42 आगे की और 9. मूसा 10. मूसा 11. व्यवस्था 12. क्रिसमस की कहानी
सीरीज़ C	1. दानियेल 2. और अलोकिक कर्म 3. यीशु ने मिले लोग 4. मसीह की मौत 5. रूत और शमुएल 6. दाऊद 7. दाऊद 8. यहोशू 9. एलिय्याह 10. एलिय्याह 11. योना 12. क्रिसमस की कहानी	1. दानियेल 2. यीशु ने मिले लोग 3. और अलोकिक कर्म 4. मसीह की मौत 5. रूत 6. शमूएल 7. दाऊद 8. यहोशू 9. एलिय्याह 10. एलिय्याह 11. परमेश्वर द्वारा उपयुक्त लोग (पुराना नियम) 12. क्रिसमस की कहानी	1. दानियेल 2. यीशु की कहावत 3. प्रभु की शक्ति 4. मसीह की मौत 5. रूत 6. शमूएल 7. दाऊद 8. यहोशू 9. एलिय्याह 10. एलिय्याह 11. पुराने नियम के और किरदार 12. क्रिसमस की कहानी

B7 कहानी 1

यूसुफ के भाईयों का आगमन - यह कहानी गलती करने के परिणामों के बारे में है।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. अपने भाइयों के बारे में यूसुफ़ के सपने सच हो गए। 2. हमारे गलतियों का परिणाम एकदम से या बाद में हमें ज़रूर भुगतना पड़ेगा। **मुख्य पद :** ***गलतियों 6:7*** **बाइबल अनुभाग :** ***उत्पत्ति 42: 1-26***
पहचान कराने	बच्चों से यूसुफ की अब तक की कहानी पर चर्चा करने के लिए कहे। उनके साथ हुए अच्छे और बुरी चीजों की एक सूची बनाने को कहे। यह कहकर सारांशित करें कि उनके भाइयों की व्यवहार के बावजूद यूसुफ के जीवन में सब बातें उसके भलाई के लिए हुए। लेकिन कनान में उसके भाई कैसे जीवित थे? बच्चो को मुख्य पद को याद दिलाएं, 'जान रखो कि तुम को तुम्हारा पाप लगेगा।'
सिखाने	कनान देश में लोग अकाल के कारण भूखे थे। याक़ूब ने सुना कि मिस्र में बहुत सारे भोजन जमा था। उसने यूसुफ के भाइयों से वहां जाकर अन्न लाने के लिए कहा। यूसुफ के सबसे छोटा भाई बिन्यामीन के अलावा सारे भाई मिस्र के लिए निकले। ***(उत्पत्ति 42: 1-5)*** यूसुफ़ मिस्र देश का अधिकारी था और सब लोगों को वही अन्न बेचता था। इसलिए जब उनके भाई वहां पहुंचे वे यूसुफ को दण्डवत किया। ***(उत्पत्ति 42: 6,7)*** बच्चों को उस सपने की याद दिलाएं जो उसने अपने भाईयों के द्वारा बेचे जाने से पहले देखा था। अब वह सपना पूरा हो रहा था। यूसुफ ने अपने भाईयों को पहचानने से इंकार किया। उसने उनसे अजनबियों की तरह व्यवहार किया और कहा, 'तुम भेदिए हो, इस देश की दुर्दशा को देखने के लिए आए हो।' भाइयों ने बताया कि यह झूठ है। उन्होंने यूसुफ को बताया कि वे ईमानदार पुरुष थे और भाई थे। उन्होंने यह भी कहा की उनके एक भाई जीवित नहीं था और सबसे छोटा घर में पिता के पास था। यह जांचने के लिए कि वे सच कह रहे थे या नहीं यूसुफ ने उन्हें वापस जाकर उनके छोटे भाई को उनके साथ लाने के लिए कहा। और यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे वापस लौटेंगे, वह भाईयों में से शिमोन को बंदीगृह में रखा। ***(उत्पत्ति 42: 8-20)*** भाइयों ने चिंतित होकर आपस में चर्चा करने लगे। वे जानते थे कि उन्होंने यूसुफ के साथ गलत किया था। समझाओ कि वे दोषी थे और उनके पाप अब उनके पास पहुँच गए थे। वे निश्चित थे कि यूसुफ के साथ किए व्यवहार के लिए परमेश्वर उन्हें दंड दे रहे थे। यूसुफ ने चुपके से उनके बात सुन लिया और दूर जाकर रोने लगा। ***(उत्पत्ति 42: 21-24)*** यूसुफ ने भाईयों के बोरों में अन्न से भरने का आदेश दिया। और उनमें से एक भाई के बोरे में उसके रुपये को भी रखने के लिए कहा। फिर भाईयों वापस घर अपने पिता के पास जाने के लिए अपने बोरे गदहों पर लादा। ***(उत्पत्ति 42: 25,26)*** **बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें**
सीखने	**मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। गलतियों 6:7** बच्चों को याद दिलाएं कि पाप हमेशा हमें मुसीबत में ले जाता है।
याद करने	**कहानी को संशोधित करने के लिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें:** 1. भाइयों को मिस्र क्यों जाना पड़ा? 2. मिस्र में अन्न कौन बेच रहा था? 3. क्या यूसुफ के भाइयों ने उसे पहचान लिया था? 4. यूसुफ ने अपने भाइयों पर क्या आरोप लगाया था? 5. यूसुफ ने भाइयों से किसे मिस्र लाने के लिए कहा? 6. भाईयों में से किसे बन्दीगृह में रखा गया था? 7. भाईयों ने क्या सोचा की यह सब उनके साथ क्यों हो रहे थे? 8. जो कुछ भी उनके साथ हो रहा था उसके कारणों के बारें में भाइयों का मानना क्या था?

B7 कहानी 2

बिन्यामीन और बुरी खबर - यह कहानी हमारे पापों के लिए हम पकड़े जाने के बारें में है।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. उनके साथ किए गए बुरे बर्ताव के बावजूद भी यूसुफ अपने भाइयों से प्यार करता था। 2. परमेश्वर भी हमें प्यार करता है और हमारे पापों के लिए हमें क्षमा करना चाहता है। **मुख्य पद :** ***इफ़िसियों 4: 32*** **बाइबल अनुभाग :** ***उत्पत्ति 42: 26 ; 44: 13***
पहचान कराने	बच्चों को कल्पना करने के लिए कहे कि वे मिस्र से कनान घर वापस जा रहे भाइयों में से एक हैं। आपके पास अब अपने परिवार को खिलाने के लिए पर्याप्त भोजन है। आप कैसे महसूस कर रहे होंगे?अब, कल्पना करो की आप अपना बोरी खोल रहा है और उसके अन्दर अनाज के साथ उस के लिए दिए गए पैसे भी पड़ा है! यह किसने वहाँ रखा होगा? क्या यह एक चाल था? क्या मिस्र के अधिकारी को अब यह लगेगा की आपने यह चोरी किया था? अब आप अधिक भोजन के लिए मिस्र वापस कैसे जा सकते हैं?
सिखाने	1. भाइयों ने अपने गदहों को लादा और घर के लिए निकले। रास्ते में बीच उस में से एक को पता चला कि अनाज के लिए जो पैसा वे दिए थे, वे अपने बोरों में वापस डाल दिए गए थे। वे बहुत डर गए। ***(उत्पत्ति 42: 26-28)*** 2. बच्चों से पूछिए कि यूसुफ ने पैसे वापस क्यों रखे होंगे। बच्चों को याद दिलाएं कि भाइयों को एहसास होने लगा कि यूसुफ के खिलाफ अपने पापों के कारण ही यह सब उनके साथ हो रहा है। 3. घर पहुंचने पर उन्होंने अपने पिता से सब कुछ बताया। उन्होंने उन्हें बताया कि मिस्र के अधिकारी ने उन पर जासूस होने का आरोप लगाया था और वह चाहता था कि बिन्यामीन को उसके पास लाया जाए। जब याकूब ने यह सुना और देखा कि पैसा अभी भी उसके बोरे में था, वह डर गया। ***(उत्पत्ति 42:29-38)*** क्या आपको लगता है कि याकूब बिन्यामीन को मिस्र ले जाने देंगे? 4. कुछ समय बीत गए, अकाल भी भयंकर होता गया। याकूब और परिवार को फिर से मुसीबत का सामना करना पड़ा। उसने भाइयों को और अन्न खरीदने के लिए मिस्र वापस जाने के लिए कहा। यहूदा ने उन्हें बताया कि जब तक उनके साथ बिन्यामीन नहीं होता तब तक वे नहीं जा सकते। उसने अपने पिता को बताया कि वह बिन्यामीन को सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी लेगा। याकूब कुछ नहीं कर सकता था, उन्हें खाना खाने की ज़रूरत थी। इस लिए याकूब ने बिन्यामीन को भाईयों के साथ मिस्र भेजने के लिए राजी हो गया। उन्होंने भाइयों से अधिकारी के लिए भेंट और दूना रुपया ले जाने को कहा। ***(उत्पत्ति 43:1-14)*** फिर से अधिकारी को मिलने जाने पर भाईयों के मन में क्या चल रहा होगा? 5. भाइयों मिस्र पहुंचे और यूसुफ के सामने खड़े हुए। जब यूसुफ ने देखा कि बिन्यामीन उनके साथ थे, उसने अपने सेवकों से अपने घर में उनके लिए एक महान दावत तैयार करने के लिए कहा। वह शिमोन को जेल से बाहर लाया। जब यूसुफ भोजन के लिए आया, तो भाइयों ने उसे फिर से दण्डवत किया। बच्चों को यूसुफ की उन सपनों के बारें में याद दिलाना। यूसुफ ने उनसे पूछा कि उनके पिता कि हालचाल पुछा और बिन्यामीन से बात करने लगे। अचानक यूसुफ का मन भर आया और उसने वह कमरा छोड़कर अपने कटोरा में गया। उसके साथ इतना कुछ होने के बावजूद यूसुफ अभी भी अपने भाइयों से प्यार करता था। जब यूसुफ वापस आया तो भोजन परोस गया और उन्होंने एक साथ भोजन किया ***(उत्पत्ति 43: 15-34)*** समझाओ कि हमारी गलतियों के बावजूद परमेश्वर हमें प्यार करता है। और अगर हम उससे माफ़ी मांगे तो वे हमें क्षमा करेंगे। 6. अगली सुबह भाई अनाज से भरा अपने बोरे के साथ कनान के लिए रवाना हुए। इस बार यूसुफ ने बिन्यामीन की बोरी में विशेष चांदी का कटोरा डाल दिए। यूसुफ ने कठोरा खोजने के लिए अपने आदमियों को भेजा और कटोरा बिन्यामीन की बोरी से मिला। और उन्हें फिर से मिस्र वापस जाना पड़ा। ***(उत्पत्ति 44:1-13)*** **बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें**
सीखने	मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। ***लूका 2: 40*** समझाओ कि यह पद में यीशु के बढ़े होने के तौर-तरीके के बारें में बताए गए हैं। हम भी ऐसे बढ़े हो सकते हैं। परमेश्वर चाहता है कि हम उससे प्यार करके उनकी सेवा करे।
याद करने	**पूछें कि निम्नलिखित वाक्य सही है या गलत हैं:** 1. भाइयों को उनके बोरों में क्या मिला? 2. क्या याकूब चाहता था कि बेंजामिन मिस्र जाए? क्यों नहीं? 3. बिन्यामीन की देखभाल करने की ज़िम्मेदारी किसने लिया? 4. बिन्यामीन को देखकर यूसुफ को कैसा लगा? 5. क्या यूसुफ अभी भी अपने भाइयों से प्यार करता था? 6. किसकी बोरी से कटोरा मिला था? 7. माफ करने का अर्थ क्या है? क्या हमें भगवान से क्षमा की आवश्यकता है? क्यों?

B7 कहानी 3

क्षमा और खुशखबरी - यह कहानी हम दूसरों को क्षमा करने के बारें में है।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. यूसुफ ने अपने भाईयों के व्यवहार के बावजूद उन्हें क्षमा किया था। 2. परमेश्वर हमें प्यार करता है और हमारे गलतियों के लिए हमें क्षमा करना चाहता है। **मुख्यपद :** ***उत्पत्ति 45:8*** **बाइबल अनुभाग :** ***उत्पत्ति 44: 14-45:28***
पहचान कराने	भाईयो कि अब तक की मिस्र के दौरे के बारें में बच्चों को याद दिलाएं। यूसुफ कि चांदी का कटोरा बिन्यामीन का बोरी में पाया गया है। भाई भारी दिलों के साथ मिस्र वापस लौटते हैं। अब अधिकारी क्या करेगा? क्या बिन्यामीन को मौत की सजा दी जाएगी या एक नौकर के रूप में रहने के लिए मजबूर किया जाएगा। अगर उन्होंने बिन्यामीन के बिना कनान वापस चले गए तो उनके पिता का क्या होगा?
सिखाने	भाई यूसुफ के घर में वापस गए। उसने अपने चांदी के कटोरा लेने के लिए उनके साथ बहुत गुस्सा होने का नाटक किया। यहूदा ने कहा की वह जानता था कि यह भयानक स्थिति उनके अधर्म के कारण हुई थी। दोषी शब्द का अर्थ समझाएं। भाइयों ने यूसुफ के सेवक बनने का प्रस्ताव रखा। लेकिन यूसुफ ने कहा कि केवल उस व्यक्ति जिसके पास से वह कटोरा मिला वही उसका दास बनेगा। बिन्यामीन को मिस्र में पीछे रहना होगा। ***(उत्पत्ति 44:14-17)*** यहूदा ने फिर से यूसुफ से बात की। उन्होंने यूसुफ से कहा कि अगर बिन्यामीन वापस उसके साथ घर नहीं गए तो उसके पिता दुःख से मर जाएगा। येहुदा ने बिन्यामीन के स्थान पर मिस्र में पीछे रहने की पेशकश की। ***(उत्पत्ति 44:18-24)*** चर्चा करें कि भाइयों के ह्रदय में परिवर्तन कैसे हुआ। वही भाई जिसने अपने एक भाई को गुलामी के लिए बेचने का विचार दिया, वो अब एक दूसरे भाई को बचाने के लिए खुद एक गुलाम बनने के लिए तैयार था। यूसुफ को पता लगा की अब उसके भाई अब एक दुसरे और अपने पिता के बारें में चिन्तित थे। यूसुफ समझ गया की अपने आप को भाईयों के सामने प्रगट करने का वक्त आ गया था। उन्होंने अपने भाइयों के आलावा बाकी सब को कमरा छोड़ने का आदेश दिया। उसके भाइयों को चिंता थी कि जोसेफ बदला लेने वाला था। लेकिन, यूसुफ ने उन्हें आश्वासन दिया कि यह सब शुरुआत से ही परमेश्वर का योजना था। परमेश्वर ने सबसे आगे यूसुफ को मिस्र बेचा ताकि के दौरान सब की ज़िन्दगी बचा सके। ***(उत्पत्ति 45:1-8)*** इस हकिकत पर चर्चा कीजिए कि यूसुफ ने अपने भाइयों को माफ कर दिया था। जब हम वाकई माफी माँगते हैं तो हम परमेश्वर हमें माफ कर देंगे। कहानी में यहूदा की तरह हमें भी यह स्वीकार करना चाहिए कि हम दोषी हैं और हमारे जीवन में गलत चीजों की जिम्मेदारी लेना चाहिए। यूसुफ को पता था कि अकाल आने वाले पांच साल तक रहेंगे। वह अपने परिवार को सुरक्षित रखना चाहता था। उसने अपने भाइयों को घर वापस जाकर अपने पिता को सब कुछ बताने और फिर अपने सभी सामान बांध कर मिस्र में रहने के लिए आने को कहा। ***(उपत्ति 45:9-28)*** ***बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें***
सीखने	**मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। उत्पत्ति 45:8** बच्चों को याद दिलाएं कि यूसुफ के जीवन में जो कुछ हुआ था, वह अकाल के समय याकूब और उसके परिवार को बचाने की परमेश्वर का योजना था।
याद करने	**कहानी को संशोधित करने के लिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें:** 1. बिन्यामीन के बोरी में क्या पाया गया था? 2. यूसुफ ने किसे अपना दास रकना चाहता था? 3. बिन्यामीन के जगह लेने का पेशकश किसने किया? 4. यदि बिन्यामीन वापस घर नहीं जाते तो उसका पिता का क्या होता? 5. यूसुफ को कैसे पता चला की उनके भाईओं का मन में परिवर्तन आया था? 6. क्या यूसुफ ने अपने भाईयों को माफ़ दर दिया था? 7. हमारे पापों को परमेश्वर द्वारा क्षमा मिलने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

B7 कहानी 4

मिस्र में एक साथ - यह कहानी हमारे जीवन के लिए परमेश्वर की योजना के बारें में है।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. यूसुफ अपने पिता याकूब से मिला। 2. अगर हम परमेश्वर पर पूरी तरह से भरोसा करते हैं तो वह बुरी परिस्थितियों से भी अच्छाई ला सकते हैं। **मुख्य पद : *उत्पत्ति 50: 20*** **बाइबल अनुभाग: *उत्पत्ति 46: 1-34***
पहचान कराने	बच्चों से पूछें कि क्या उन्हें कभी भी अपना घर या देश छोड़कर कहीं नई जगह जाना पड़ा है। सारे सामान बांधना, गाड़ियों का योजना करना, कितना चहल-पहल हुए होंगे! बच्चों से पूछों की उन्हें कैसे लगे होंगे। क्या वे चिंतित थे या उत्साहित थे? बच्चों को याद दिलाएं कि याकूब और उसके सारे परिवार मिस्र से गोशेन में जा रहे थे।
सिखाने	1. याकूब (इस्राएल) और उनके सभी परिवार ने अपने सामान बांधा और अपने पशुधन के साथ मिस्र के लिए यात्रा पर निकले। जब वे बेर्शेबा पहुंचे वहां उन्होंने परमेश्वर को बलि चढ़ाने के लिए रुके। वे बहुत आभारी थे क्योंकि परमेश्वर उनके देखभाल कर रहे थे। ***(उत्पत्ति 46:1)*** 2. परमेश्वर ने एक सपने में याकूब से बात की। उन्होंने याकूब को मिस्र जाने से न डरने के लिए कहा। परमेश्वर ने वादा किया की वे याकूब के साथ होगा और मिस्र में उसे एक बड़ी जाति बनाएगा। ***(उत्पत्ति 46: 2-4)*** बच्चों को बताओ कि परमेश्वर हमेशा अपने वादे रखते हैं। 3. याकूब और उसका परिवार बेर्शेबा से मिस्र के लिए निकले। कुल मिलाकर मिस्र में अब याकूब के 70 परिवार वाले थे। ***(उत्पत्ति 46: 5-27)*** 4. जब सभी गोशेन के देश में पहुंचे यूसुफ उन्हें मिलने आया। इतने वर्षों के बाद अपने पिता से मिलकर वह बहुत खुश था। उसने अपने पिता से गला मिला और बहुत रोया। राजा फिरौन ने उसका स्वागत किया और गोशेन देश में एक साथ रहना की अनुमति दी। ***(उत्पत्ति 46: 28-34)*** 5. बच्चों के साथ इस कहानी की खुश अंत पर चर्चा करे। समझाओ कि हमारे अच्छे और बुरे समय में भी हमें परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए, जैसे की यूसुफ ने किया था। हम अपने बुरे समय के दौरान परमेश्वर पर भरोसा कर सकते हैं क्योंकि उन परिस्थितियों में से भी परमेश्वर भलाई ला सकता है। **बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें**
सीखने	मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। ***उत्पत्ति 50: 20*** इस पद का उपयोग करके इस कहानी का संक्षेप कीजिए। भाइयों ने यूसुफ को कैसे चोट पहुंचाई? परमेश्वर ने इसे कैसे एक अच्छी स्थिति में बदला? बच्चों को समझाएं कि परमेश्वर हमारे जीवन के नियंत्रण में है।
याद करने	**कहानी को संशोधित करने के लिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें:** 1. याकूब का परिवार कहाँ जा रहा था? 2. वे बलिदान देने के लिए कहां रुके? 3. परमेश्वर ने याकूब से क्या वादा किया? 4. गोशेन पहुंचने पर उन्हें कौन मिलने आए थे? 5. याकूब के परिवार के कितने लोग अब मिस्र में रह रहे थे? 6. इस कहानी कि शुरुआत विषादपूर्ण था। परमेश्वर ने इसे एक आनंदपूर्ण अंत में कैसे बदल दिए?

B8 कहानी 1

यीशु से मिले लोग: बीमार महिला - यह कहानी प्रभु यीशु की शक्ति के बारे में है

	हम सीख रहे हैं कि: 1. यीशु ने लोगों को चंगा किया क्योंकि वह परमेश्वर का पुत्र है। 2. प्रभु यीशु हमारे जीवन में भले काम कर सकते हैं। **मुख्य पद :** ***प्रेरितों 10:38*** **बाइबल अनुभाग :** ***लूका 4:38-44***
पहचान कराने	बच्चों को समझाओ कि यीशु के समय के दौरान कई बीमार लोग थे लेकिन मदद करने के लिए बहुत कम वैद्य और दवाएं थीं। आजकल एक डॉक्टर के व्यस्त जीवन के बारे में बात करें। कभी-कभी वे हमारी बीमारी को चंगा करते हैं, और कभी वे नहीं कर सकते। बच्चों को बताओ कि इस कहानी में हम सबसे अच्छे चिकित्सक के बारे में जानेंगे - प्रभु यीशु।
सिखाने	1. यीशु लोगों को सिखाने के लिए आराधनालय गए थे। उसने एक आदमी को भी चंगा किया था। अब उन्हें कुछ शिष्यों के साथ शमौन के घर जाने का समय आ गया था। शमौन की सास बहुत बीमार थी। समझाएं कि बुखार के कारण वह कैसे महसूस कर रही होगी। शमौन और दूसरे लोगों को पता था कि यीशु ही उसे चंगा करने में सक्षम था इसलिए उन्होंने यीशु से मदद के लिए विनती की। उन्हें कैसे पता था की यीशु मदद कर सकेंगे? ***(उत्पत्ति 4:38)*** 2. यीशु मदद करने के लिए तैयार था। उसने बुखार को आदेश दिया और बुखार उत्तर गया। अचानक वह बेहतर हो गई और सेवा टहल करने लगी। ऐसा लगता था जैसे वह कभी बीमार नहीं थी। बच्चों को उन चीजों के बारे में सोचने के लिए कहें, जो यह सब देखने के बाद वहां इकट्ठे लोगों ने एक-दूसरे से कहा होगा। ***(लूका 4:39)*** 3. उस शाम सूरज डूबते समय नाना प्रकार के बीमारियों में पड़े लोगों को यीशु के पास ले आए। चर्चा करें की किस प्रकार के लोग वहां आए होंगे। दिन के अंत में यीशु कैसे महसूस कर रहा होगा? देर रात होने पर भी यीशु के पास सभी लाए गए लोगों पर हाथ रखने के लिए समय था। कोई भी चंगा हुए बिना नहीं लौटा। लोगों की प्रतिक्रियाओं पर चर्चा करे। ***(लूका 4:40)*** 4. अगली सुबह यीशु एक सुनसान जगह गया जहां वह अपने पिता से प्रार्थना कर सकता था। लेकिन फिर भी लोग उसको तलाशते हुए वहां पहुंचा। वे उनके अद्भुत शक्ति के बारे में जानते थे। ***(लूका 4: 42)*** 5. आज भी प्रभु यीशु अभी लोगों की परवाह करता है और सहायता करना चाहता है। जब हम उस पर भरोसा करें तो वह हमारे जीवन में अच्छे काम करने के लिए तैयार हैं। **बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें**
सीखने	**मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। प्रेरितों 10:38**
याद करने	**कहानी को संशोधित करने के लिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें:** 1. यीशु आराधनालय में क्या कर रहा था? 2. यीशु किसके घर गया? 3. कौन बीमार था? 4. यीशु ने उन्हें ठीक करने के लिए क्या दो चीजों की ? 5. चंगा होने के बाद उसने क्या किया? 6. अधिक से अधिक लोग यीशु के पास क्यों आए? 7. अगली सुबह यीशु ने क्या महत्वपूर्ण कार्य किया? 8. यीशु क्या करते फिर रहे थे?

B8 कहानी 2

यीशु से मिले लोग: कोढ़ रोगी - यह कहानी प्रभु यीशु कि हमारे लिए प्यार के बारें में है।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. यीशु ने कोढ़ी को चंगा करके अपना प्यार दिखाया। 2. यीशु हमें प्यार करता है और हमारे जीवन को बदलना चाहता है। **मुख्य पद :** ***लूका 7:22*** **बाइबल अनुभाग:** ***लूका 5: 12-16***
पहचान कराने	बच्चों से उन संक्रामक बीमारियों के बारे में पूछें जिसके उन्हें अनुभव है या सुना है। बिमारी के वक्त दूसरों से दूर रहने और कुछ मज़ेदार कार्य न कर पाने के बारे में बात करें।बताए कि यीशु के समय में, कुष्ठ रोग एक आम त्वचा रोग था। और जो भी इससे पीड़ित थे उन्हें अपने परिवार के साथ रहना या काम पर जाना मना था। इस बिमारी का कोई इलाज भी नहीं था। बच्चों को उनके स्वास्थ्य के लिए आभारी होने के लिए प्रोत्साहित करें।
सिखाने	1. एक दिन कुष्ठ रोगी यीशु के पास आया। वह यीशु के सामने मुँह के बल गिरा और विनती की, 'हे प्रभु, यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।' वह जानता था कि अगर यीशु चाहता है तो उसे शुद्ध करने की शक्ति उन्हें है। क्या यीशु उसे चंगा करने को तैयार था? क्या यीशु एक संक्रामक रोगी को मिलना चाहता था? ***(लूका 5:12)*** 2. ज़ाहिर है, यीशु उसे मदद करना चाहता था। वह उसे बहुत प्यार करता था और जानता था कि उन्हें कितनी मदद की ज़रूरत थी। तब यीशु ने एक अद्भुत कार्य किया। वह अपना हाथ बढ़ाकर उसे छुआ और कहा, 'में चाहता हूँ, तू शुद्ध हो जा।' यीशु को उसे छूने से कुष्ठ रोग नहीं हुआ, इसके बजाय आदमी तुरंत बेहतर हो गया था। वर्णन करें की कैसे उसकी त्वचा चिकनी और स्वस्थ बन गया और उस आदमी का विस्मय और कृतज्ञता पर भी प्रतिबिंबित करें। ***(लूका 5:13)*** यह एक और चमत्कार था। यीशु ने एक बार फिर बीमारी और लोगों के जीवन को बदलने पर उनका महान शक्ति दिखाया था। 3. बाइबल हमारे पाप की तुलना कुष्ठ रोग से करता है। पाप के बारे में बात करें और समझाएं की कैसे यह हमारे जीवन को लूटता है। प्रभु यीशु हमारे द्वारा किए गए पापों के बावजूद हमें प्यार करता है। अगर हम तैयार हैं तो, वह हमें क्षमा करके हमारे पाप से हमें शुद्ध कर सकते है। जो हमारे जीवन में सम्पूर्ण परिवर्तन लाएंगे। 4. यीशु ने मनुष्य को चंगा किया था। और उसने उस मनुष्य से कहा कि वह जाकर अपने आप को याजक को दिखाएं। अब से उसका जीवन में कैसे बदल जाएगा? वह आदमी उस दिन कभी नहीं भूलेगा जिस दिन उसने यीशु से मिला था। ***(लूका 5:14)*** जिस दिन हम प्रभु यीशु से हमारे पापों को क्षमा करने के लिए कहें तो वह दिन हमारे लिए सबसे अच्छा दिन होगा। **बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें**
सीखने	मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। ***लूका 7:22*** इस पद में छह तरीकों की सूची है जिससे प्रभु यीशु लोगों के जीवन में बदलाव लाता है।
याद करने	**बताएं कि क्या निम्नलिखित वाक्य सही है या गलत :** 1. कुष्ठ रोग एक संक्रामक रोग है। 2. आदमी को केवल अपने परिवार के साथ रहने की अनुमति थी। 3. वह यीशु के सामने घुटनों पर गिरा। 4. आदमी को यकीन नहीं था कि यीशु उसे चंगा कर सकता है। 5. यीशु ने उसे छुआ। 6. यीशु उसे ठीक करने में सक्षम था क्योंकि वह परमेश्वर का पुत्र है। 7. वह कुछ समय के बाद बेहतर हो गया। 8. उसे खुद याजक के पास जाकर अपने आप को दिखाने की जरूरत थी। 9. हम सभी को पाप नामक एक बीमारी है। 10. प्रभु यीशु हमें प्यार करता है और हमारे पाप को क्षमा करने के लिए तैयार है।

B8 कहानी 3

यीशु से मिले लोग: एक लाचार आदमी - यह कहानी बताते है कि प्रभु यीशु क्षमा कैसे करते है।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. यीशु को केवल एक पक्षाघात आदमी को चंगा करने के ही नहीं बल्कि उसके पापों को माफ करने के लिए भी शक्ति था। 2. यीशु को हमारे पापों को क्षमा करने की शक्ति है **मुख्य पद :** ***लूका 5:24*** **बाइबल अनुभाग :** ***लूका 5: 17-26***
पहचान कराने	बच्चों से पूछें कि वे स्कूल या घर में दोस्त की मदद करने के लिए क्या कर सकते हैं। उनकी सहायकता की सराहना करें। आज की कहानी में, चार दोस्त अपने लकवे मित्र को यीशु के पास ले आते हैं। वे उसे यीशु के पास क्यों लाये? हाँ, उन्हें पता था कि यीशु को अपने दोस्त को चंगा करने की शक्ति थी।
सिखाने	1. यीशु के करीब पहुंचना उतना आसान नहीं था। बड़ी भीड़ पहले से ही यीशु को सुनने के लिए घर में मौजूद था। हमारे लिए भी यीशु के शब्दों को सुनने की इच्छा होना जरूरी है। दरवाजे से लाना असंभव था, इसलिए उन्होंने छत पर चढ़कर खपरैल हटाकर खाट समेत अन्दर ले आया। वे आसानी से हार मानने को तैयार नहीं थे क्योंकि उन्हें पता था कि केवल यीशु ही एक व्यक्ति था जो उसे मदद कर सकता था। बच्चों को इन सब के बारें में कल्पना करने के लिए कहे। ***(लूका 5:18,19)*** 2. यीशु उसे कैसे चंगा करेगा। बच्चों को याद दिलाएं कि पिछली कहानियों में यीशु ने कैसे पतरस की सास और कुष्ठ रोगियों को चंगा किया था। लेकिन आज की कहानी में यीशु ने उस आदमी से कहा, 'हे मनुष्य, तेरे पाप क्षमा हुए।' घर में इकट्ठे कुछ लोग गुस्से हुए। उन्हें विश्वास नहीं था कि यीशु पापों को क्षमा कर सकता है। उन्होंने सोचा कि केवल परमेश्वर पापों को माफ कर सकते हैं। और वे यह नहीं मानते थे कि यीशु परमेश्वर का पुत्र था। यीशु उनके मन की बातें जानता था। वह हमारे विचारों को भी जानता है। ***(लूका 5: 20-24)*** 3. उस मनुष्य की मन के अन्दर कोई देख नहीं सकते थे और यीशु यह साबित करना चाहता था कि वह वास्तव में मनुष्य के पापों को माफ कर दिया था। इसलिए यीशु ने लकवे को उठकर अपने खाट उठाकर घर जाने को कहा। तुरंत उसने परमेश्वर की प्रशंसा करते हुए ऐसा किया। हर कोई आश्चर्यचकित थे। यीशु की शक्ति केवल आदमी के पैरों को ठीक नहीं किया लेकिन वह पापों को भी माफ कर सकते थे। किसी और को इस तरह की शक्ति नहीं थी। ***(लूका 5: 24-26)*** 4. हमारी सबसे बड़ी ज़रूरत है कि हमारे पापों को क्षमा मिले। समीक्षा करें कि बच्चों ने पाप के बारे में क्या सीखा है और पाप कैसे परमेश्वर के साथ हमारे संबंधों को खराब करेंगे और यह हमें स्वर्ग से बाहर कैसे रखेंगे। प्रभु यीशु में हमारे पापों को माफ करने की शक्ति है क्योंकि वे पापरहित थे। वह हमारे पाप के लिए सजा लेने के लिए क्रूस पर मरने के लिए तैयार था। हमें अपने पाप के लिए सचमुच खेद होना चाहिए और प्रभु यीशु का शुक्रगुज़ार होना चाहिए क्योंकि उन्होंने हमें क्षमा करने का एक मार्ग प्रदान किया था। **बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें**
सीखने	मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। : ***लूका 5:24*** व्याख्या कीजिए की 'मनुष्य के पुत्र' प्रभु यीशु का दूसरा नाम था।
याद करने	**कहानी को संशोधित करने के लिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें:** 1. उस आदमी के कितने दोस्त थे? 2. उस आदमी को क्या बिमारी था? 3. उसे यीशु के पास लाने में कठिनाई क्या था? 4. वे घर अन्दर कैसे आए? 5. यीशु ने आदमी से पहले क्या कहा था? 6. कुछ लोग गुस्से में क्यों थे? 7. यीशु ने कैसे दिखाया कि उसने मनुष्यों के पापों को माफ़ किया था? 8. प्रभु यीशु ने हमारे लिए किए सबसे महत्वपूर्ण कार्य क्या है?

B8 कहानी 4

यीशु से मिले लोग: मत्ती - यह कहानी प्रभु यीशु के अनुगमन करने के बारे में है

	हम सीख रहे हैं कि: 1. यीशु मत्ती कि जीवन के बारें में सब जानता था, लेकिन फिर भी वह चाहता था की मत्ती उसका अनुगमन करें। 2. यीशु चाहता है की हम भी उनका अनुगमन करे। **मुख्य पद :** ***लूका 5: 32*** **बाइबल अनुभाग :** ***लूका 5: 27-32***
पहचान कराने	बच्चों से पूछिए की वह बड़े होकर क्या बनना चाहते है। समझाओ कि आज की कहानी मत्ती नामक एक आदमी के बारे में है जो चुंगी लेने वाला था। वह सड़क के किनारे पर बैठेकर लोगों से चुंगी एकत्र करके रोमियों को देते थे जो देश पर शासन करते थे। चर्चा करे की आज भी हम चुंगी देते है और बच्चों को समझाएं की ये किस लिए उपयोग किया जाता है। दुर्भाग्य से कोई भी वास्तव में मत्ती को पसंद नहीं करते थे। चुंगी लेने वालों को इस लिए नापसंद किया जाता था क्योंकि वे दुश्मन रोमनों के लिए काम करते थे और वे कभी-कभी ज्यादा पैसा लेते थे और अपने आप के लिए रखते थे।
सिखाने	1. एक दिन यीशु ने देखा कि मत्ती अपनी नौकरी कर रहा था। क्या यीशु को पता था कि मत्ती किस तरह का आदमी था? हाँ, वह हम में से हर एक के बारे में सबकुछ जानता है। क्या यीशु मत्ती के साथ संबंध रकना चाहता था? हां! क्योंकि मत्ती जैसे लोगों की मदद करने के लिए ही यीशु आए थे। वह मत्ती के जीवन को बदल सकता था। इसलिए उसने मत्ती के पास जाकर उनके अनुगमन करने के लिए कहा। ***(लूका 5: 27)*** मत्ती के सामने का चुनाव क्या था? 2. मत्ती को तुरंत पता चल गया कि उन्हें क्या करना चाहिए। वह यीशु का अनुगमन करेगा। कितना अद्भुत था कि यीशु ने उसे आमंत्रित किया था! वह उठ गया, सब कुछ छोड़कर यीशु के पीछे गया। समझाओ कि प्रभु यीशु हमे भी उन्हें अनुगमन करने निमंत्रण करता है। हमें भी एक चुनाव करने की ज़रूरत है। मत्ती अपने दोस्तों को यीशु से मिलाना चाहते थे ताकि उन्हें पता चले कि उनका जीवन में बदलाव कैसे आया था। इसलिए उन्होंने यीशु और उसके शिष्यों को शाम का भोजन के लिए अपने घर में आमंत्रित किया। कुछ लोग जो वहाँ थे सोचा की मत्ती और उसके दोस्तों के साथ यीशु का मिलना गलत था। उन्होंने यह सोचा कि यीशु को पापियों के बजाय अच्छे लोगों के साथ समय बिताना चाहिए। वे भूल रहे थे कि हर कोई एक पापी है। यीशु ने उनसे समझाया कि वह धरती पर क्यों आया था - यीशु पापियों के लिए आए थे ना सिर्फ अच्छे लोगों के लिए। ***(लूका 5: 29-32)*** यीशु पाप से द्वेष करता है लेकिन वे मत्ती और हमारे तरह पापियों को प्यार करता है। हमें भी उनका अनुगमन करके उनके माफी के लिए भरोसा करने की ज़रूरत है। 3. बाद में परमेश्वर एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य के लिए मत्ती को चना। उसने नए नियम की पहली पुस्तक लिखा। वह एक अद्भुत दिन था जब उसने यीशु का अनुगमन करने का निर्णय लिया। उसके बाद से उसके जीवन को सम्पूर्ण बदलाव आया। **बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें**
सीखने	मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। लूका 5: 32 सच्चाई और पश्चाताप जैसे मुश्किल शब्दों की व्याख्या करें।
याद करने	कहानी को संशोधित करने के लिए पर आधारित प्रश्न पूछें जैसे : 1. मत्ती की नौकरी क्या थी? 2. यीशु न मत्ती से क्या कहा? 3. यीशु का पीछा करने के बाद मत्ती ने क्या किया?

B9 कहानी 1

मूसा का जन्म - यह कहानी परमेश्वर की परवाह के बारें में है।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. परमेश्वर मूसा के लिए परवाह करता था और वे हमारे लिए ह भी परवाह करता है। 2. परमेश्वर को मूसा के जीवन के लिए एक योजना था, और हमारे लिए भी उनका योजना है। **मुख्य पद : *इब्रनियों 11: 23*** **बाइबल अनुभाग : *निर्गमन 2: 1-10***
पहचान कराने	समझाओ कि हमारे जीवन के लिए परमेश्वर का एक योजना है। जिन परिवारों में हम पैदा होते हैं और हमारे साथ जो चीजें होती हैं, वे यादृच्छिक नहीं हैं। परमेश्वर इन सभी चीजों को हमें तैयार करने के लिए उपयोग करता है ताकि हम उसकी सेवा कर सकें। इन कहानियों में हम मूसा के बारें में सीखेंगे। मूसा के बड़े होने पर परमेश्वर को उसके लिए एक महत्वपूर्ण कर्तव्य था। आज हम सीखेंगे कि मूसा के बचपन में यीशु ने उसका देखभाल कैसे किया था। मूसा की कहानी की बाइबल की दूसरी पुस्तक में पाया जाता है।
सिखाने	इस्राएली एक दास बनने की हालातों को संक्षेप में बताएं। ***(निर्गमन 1; 1-11)*** राजा फिरौन इतने हताश हो गए कि इस्राएली की संख्या में बढ़ोतरी को रोकने के लिए उन्होंने सभी इस्राएली शिशु लड़कों को नील नदी में डूबाने का फैसला किया। ***(निर्गमन 1: 22)*** इन परिस्थितियों में जब एक इस्राएली माता-पिता को एक बेटा पैदा होता है तो उनकी मनोविकार क्या होगा? एक घर में, एक सुंदर स्वस्थ बेटा पैदा हुआ। उसके माता-पिता ने उसका सुरक्षा के लिए परमेश्वर पर भरोसा करके उसे घर में छिपा रखा था। लेकिन तीन महीने के बाद वे उसे और छिपा नहीं सके। क्यों नहीं? उसकी मां ने सरकंडों से एक जल रोधक टोकरी बनाई, बच्चे को अंदर रखा और नदी के किनारे कांसों के बीच छोड़ आई। बच्चे की बहन मरियम को उस पर ध्यान रखने के लिए छोड़ दिया। लेकिन सिर्फ़ परमेश्वर ही बच्चे को सुरक्षित रख सकता था। ***(निर्गमन 2: 1-4)*** वर्णन करें कि कैसे मरियम राजकुमारी (फिरौन की बेटी) और उसकी सहायकों को साथ आते हुए देख रही थी। और कैसे राजकुमारी ने टोकरी देखा और उसके सहायक से उसे उसके पास लाने के लिए कहा। इब्रे बच्चे को ट ोकरी के अंदर देखने पर उसकी प्रतिक्रिया का विवरण दे। राजकुमारी उसे हानि नहीं होने देगी।परमेश्वर शिशु को सुरक्षित रखने का काम कर रहे थे। ***(निर्गमन 2: 5,6)*** तब मरियम ने आगे बढ़कर बच्चे के लिए एक इब्रे धाई को खोजने की पेशकश की। राजकुमारी ने अनुमति दी और मरियम अपनी मां को बुलाने के लिए गई। राजकुमारी की सहमति से मां को पूरी सुरक्षा में अपने घर पर बच्चे का देखभाल कर पाई। बाद में, जब वह कुछ बड़ा हो गया, राजकुमारी ने उसे फिरौन के महल में रहने के लिए ले आया। उसने उसे अपनाया और उसका नाम मूसा रखा, जिसका मतलब है 'पानी से निकाला गया' ***(निर्गमन 2: 7-10)*** अब मूसा मिस्र का राजकुमार बन गया था। बच्चों को यह समझने में मदद करें कि परमेश्वर का हाथ इन सब के पीछे था। फिरौन कि कानून के अनुसार बच्चे को डूबाना चाहिए था। मूसा के माता-पिता को परमेश्वर पर विश्वास था की वे अपने बच्चे को सुरक्षित रखेंगे। यह परमेश्वर कि योजना का सिर्फ एक शुरूआत था। परमेश्वर चाहता है कि हम भी उस पर भरोसा करें ताकि हमारी जीवन में उनका योजना पूरा हो सके। बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें
सीखने	**मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। इब्रनियों 11: 23**
याद करने	1. बाइबल की किस किताब में मूसा की कहानी पाया गया है? 2. फिरौन ने सभी इब्रे नवजात लड़कों को क्या करने का फैसला किया? 3. बच्चा कितनी दिन तक घर पर छिपा हुआ था? 4. माँ ने क्या किया? 5. उसने बच्चे को कहाँ रखा? 6. बच्चे पर ध्यान रखने के लिए किसने नदी किनारे स्खा? 7. बच्चे को किसने देखा? 8. उस समय मूसा का जीवन खतरे में क्यों नहीं था? 9. कहानी में किसने विश्वास दिखाया? 10. किसने मूसा को सुरक्षित रखा ?

B9 कहानी 2

मूसा की बड़ी गलती - यह कहानी वो करने के बारें में है जो हमें अच्छा लगता है।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. अपने क्रोध में जल्दी व्यवहार करके मूसा ने गलती की। 2. गलत काम करने के परिणामों से हम कभी बच नहीं सकते। **मुख्य पद :** ***निर्गमन 2:11-15*** **बाइबल अनुभाग :** ***गिनती 32: 23***
पहचान कराने	कभी-कभी हमे लगता हैं कि हम सबसे समझदार हैं। पिछले हफ्ते हमने मूसा के बारे में सीखा था। मूसा अपने बचपन में कहाँ रहते थे? उनके पूर्वज को किस नाम से जाने जाते थे? बच्चों को समझाएं कि वे गुलाम थे और मिस्र के लोग उन पर क्रूर व्यवहार किया करते थे। आज की कहानी में मूसा जवान हो गया था। कहानी को ध्यान से सुनो ताकि आप सीख सके की किस परिस्थिति में मूसा को लगा कि वह सबसे समझदार हैं।
सिखाने	1. एक दिन के मूसा बाहर अपने ही लोगों को मिलने गए। अचानक उन्होंने देखा कि एक मिस्री इक इब्रे भाई को मार रहा था। तुरंत ही मूसा ने चारों ओर देखा कि कोई नहीं है, और उसने उस मिस्री को मार डाला। फिर उसने रेत में शरीर को छिपा दिया। मूसा को लगा कि उसने सही काम किया था लेकिन क्या वह सही था? बच्चों को समझाएं कि मूसा ने जो किया वो बहुत गलत थी। समझाओ कि परमेश्वर जानता था कि मिस्री ने गलत थे और वे यह भी जानता था की भविष्य में उनके साथ कैसा व्यवहार करेंगे। क्या आपको लगता है कि मूसा बच पायेगा? यदि नहीं तो क्यों? ***(निर्गमन 2: 11-12)*** 2. अगले दिन मूसा ने देखा की दो इब्रे लड़ रहे थे। जब उसने पूछा कि क्या हो रहा था, उसने कहा, 'किसने तुझे हम लोगों पर हाकिम और न्यायी ठहराया? जैसे तुमने मिस्री का घात किया उसी तरह तू मुझे भी घात करना चाहता है?' अब मूसा जान गया कि वह मिस्री की हत्या के बारें में लोग जान गए थे। फिर फिरौन ने भी सुना कि मूसा ने क्या किया था और उसे मारना चाहा। मूसा अपने जीवन बचाकर मिध्यान देश जाकर रहने लगा। जहां उन्होंने यित्रो नामक व्यक्ति के लिए एक चरवाहा के रूप में काम किया। ***(निर्गमन 2: 13-15)*** 3. परमेश्वर को भी मूसा की गलती के बारे में पता था। चर्चा करें की कैसे परमेश्वर वो सब जानते है जो हम करते है। हालांकि मूसा अब एक युवा था उसने एक बड़ी गलती की। वह अभी भी एक नेता होने के लिए तैयार नहीं था उसे काफी कुछ सीखना था। हमें मूसा की गलती से सीखने की जरूरत है। हमें सही तरीके से कार्य करने में सहायता मिलने के लिए परमेश्वर पर भरोसा करने की आवश्यकता है। **बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें**
सीखने	मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। ***निर्गमन 2:11-15*** मूसा की गलती को इस पद से संबंधित करें। मूसा का पाप क्या था? वह कैसा पकड़ा गया? बच्चों के अनुभव से प्रासंगिक आप ऐसी एक स्थिति का विशिष्ट उदाहरण भी दे सकते हैं।
याद करने	बताएं कि क्या निम्नलिखित वाक्य सही है या गलत : 1. मूसा ने एक इस्राएली को मार दिया था। 2. उसने सोचा कि कोई भी उसे नहीं देखा। 3. एक अन्य इब्रे ने उसे देखा था। 4. जो हुआ वो परमेश्वर ने देख लिया था। 5. फिरौन ने मूसा को बंदीगृह में डाला। 6. एक नेता बनने से पहले मूसा को अभी भी बहुत कुछ सीखना बाकी था।

B9 कहानी 3

मूसा एक जलती झाड़ी को देखता हैं - यह कहानी परमेश्वर के लिए काम करने के लिए तैयार रहने के बारे में है।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. परमेश्वर पवित्र है और हमें हमेशा इसे याद रखना चाहिए। 2. मूसा एक विमुख नेता था लेकिन परमेश्वर ने उनकी मदद करने का वादा किया। **मुख्य पद :** ***निर्गमन 3:12*** **बाइबल अनुभाग:** ***निर्गमन 3 - 4:17***
पहचान कराने	जब आपसे कुछ महत्वपूर्ण या रोमांचक करने के लिए कहे जाए तो आप कैसा महसूस किया होगा? आज की कहानी मूसा की बड़ी गलती के 40 साल बाद होता है। मूसा 40 वर्षों के लिए रेगिस्तान में एक चरवाहा रहा था। परमेश्वर उसे भूल नहीं था। परमेश्वर मूसा को माफ करने के लिए तैयार था और उसको करने के लिए एक विशेष कर्तव्य भी था।
सिखाने	1. हर दिन एक जैसा ही चल रहा था फिर एक दिन मूसा ने जलती हुई एक झाड़ी देखा। अजीब बात यह थी कि झाड़ी जल रहा था लेकिन भस्म नहीं हो रहा था। मूसा उसे देखने के लिए करीब गया और फिर परमेश्वर ने कहा मूसा को पुकारा। पवित्र भूमि का मतलब समझाओ - बहुत ही खास जगह क्योंकि परमेश्वर वहां थे। हमें यह समझने की ज़रूरत है कि परमेस्वर पवित्र है और हमसे अलग हैं - वे पापरहित है। मूसा ने अपनी जूठा उतारा और अपना चेहरा छिपा रखा क्योंकि उसने परमेश्वर की महानता को समझा। ***(निर्गमन 3: 1-6)*** 2. हमें परमेश्वर की पवित्रता के प्रति सम्मान करने की आवश्यकता है। बच्चों को याद दिलाएं कि मिस्र में इस्राएलीयों का जीवन कैसे था। परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वह इस्राएली के दुख को जानता था। और अब वह उन्हें मिस्र से बाहर लाकर एक नए देश ले जाने जा रहा था। परमेश्वर चाहता था कि मूसा उस प्रजा का नेता बने और राजा फिरौन से बात करें। चर्चा करे की फिरौन के पास वापस जाने पर मूसा को कैसा महसूस हुआ। ***(निर्गमन 3: 7-10)*** 3. समझाओ कि मूसा एक नेता बनने के लिए तैयार नहीं था। मूसा अपने एतराज व्यक्त करने के लिए क्या कारण दिए। परमेश्वर ने उसे क्या प्रत्युत्तर दिया। 4. में महत्वपूर्ण नहीं हूँ - मैं आपके साथ रहूंगा। ***(3:11,12)*** मैं आपका नाम नहीं जानता - 'में जो हूँ सो हूँ' मैं तुम्हारे पितरों का देवता हूं। अब्रहम का परमेश्वर। ***(3:13-15)*** वे मुझे विश्वास नहीं करेंगे - मैं शक्ति साबित करने के लिए चमत्कार दिखाऊंगा। ***(4:1-9)*** मैं सही शब्दों कहने में सक्षम नहीं हूं - मैं आपको बोलने के लिए शब्द दूंगा। ***(4:13)*** कृपया किसी और को भेजें- हारून तुम्हारा सहायक होगा और वह तेरी और से बाते किया करेंगे। 5. क्या मूसा एक ऐसे व्यक्ति है जिसे आप नेता बनाना चाहते है? क्या आप को लगता है की परमेश्वर मूसा के बहाने से खुश थे? नहीं, लेकिन मिस्र में मूसा ने जो गलती किया और अब उनके बहाने के बावजूद वह परमेश्वर का चुनिन्दा था। हमारी अगली कहानी में हम सीखेंगे कि आखिरकार मूसा ने कैसे परमेश्वर का आज्ञा पालन करने के लिए तैयार हो गया ताकि उसके जीवन के लिए परमेश्वर की योजना पूरा हो सके। मूसा को आगे के जीवन में पूरी तरह से परमेश्वर पर भरोसा करना पड़ेगा। 6. कभी-कभी परमेश्वर हम से ऐसे चीज़े करने को कहते है जो हमें मुश्किल लग सकते है। हमें याद रखना चाहिए कि वह हमारे साथ है और हमारी मदद करेंगे। **बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें**
सीखने	मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। ***निर्गमन 3:12***
याद करने	1. मूसा ने झाड़ी के बारे में अजीब क्या देखा था? 2. जब वह पवित्र भूमि पर था तब मूसा ने क्या किया? 3. पवित्र का मतलब क्या है? 4. मूसा के लिए परमेश्वर का कर्तव्य क्या था? 5. मूसा ने क्या बहाने दिए? 6. परमेश्वर के बारें में मूसा ने क्या बहाना बनाया? 7. परमेश्वर ने मूसा को किसे अपने साथ ले जाने की अनुमति दी? 8. परमेश्वर ने मूसा को छोड़ नहीं दिया। क्यों नहीं?

B9 कहानी 4

मूसा परमेश्वर का संदेश लाता है - यह कहानी मूसा का मिस्र लौटने के बारे में है।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. मूसा आख़िरकार परमेश्वर के लिए आज्ञाकारी बन गया। 2. मूसा के जीवन के लिए उनके योजना को परमेश्वर ने अपने वादों का पालन करके पूरा किया। **मुख्य पद :** ***निर्गमन 4:15*** **बाइबल अनुभाग :** ***निर्गमन 4: 1-31***
पहचान कराने	हमारे जीवन में हुए महत्वपूर्ण परिवर्तनों के बारे में बात करें। मूसा के जीवन में बहुत बदलाव हुए थे - उनका जीवन जब वह शिशु था, वहाँ से फिर फिरौन के महल मे 40 साल तक रहना, उसके बाद 40 साल तक रेगिस्तान में बिताना। अब मूसा अपने जीवन में सबसे बड़ी चुनौती का सामना कर रहा था। परमेश्वर ने उसे से क्या करने के लिए कहा था?
सिखाने	1. मिध्यान देश में मूसा को अब एक पत्नी और दो बेटे थे। उसने मिस्र वापस जाने के लिए अपने ससुर यित्रो से पूछा। यित्रो ने अनुमति दी और मूसा ने अपनी पत्नी और उसके बेटों को गधे पर चढ़ाकर मिस्र लौटा। मूसा ने परमेश्वर की उस लाठी को ले लिया जिसे परमेश्वर ने उससे इस्तेमाल करने के लिए कहा था। परमेश्वर ने मूसा से कहा कि जो लोग मिस्र में उन्हें मारना चाहते थे वे सब मर गए थे। परमेश्वर मूसा की मदद कर रहे थे ताकि वह न डरे। पहले से ही परमेश्वर मूसा के प्रति अपने वादों का पालन कर रहा था। क्या आप पिछले सप्ताह से मुख्य पद को याद कर सकते हैं? ***(निर्गमन 4:18-20)*** 2. फिर परमेश्वर मूसा से किया एक और वादा को निभाया। जबकि मूसा अपनी यात्रा पर था, तब उसका भाई हारून आकर उससे मिला। हारून मूसा के साथ क्यों जा रहा था? मूसा ने हारून से उस लाठी के बारें में और वह सब बताया जो परमेश्वर ने उससे कहा था। अपने वादे को पूरा करने के लिए परमेश्वर पर हम हमेशा भरोसा कर सकते हैं। अगर हम उसके हैं, तो वह हमारे लिए भी यही करेगा। ***(निर्गमन 4: 27,28)*** 3. जब वे मिस्र पहुंचे, मूसा और हारून, इस्राएली नेताओं से मिले और उन्हें परमेश्वर की योजना के बारे में बताया। तब लोग इकट्ठा हुए फिर मूसा ने उन चमत्कारों को दिखाया जो परमेश्वर ने उन्हें अपनी लाठी के साथ करने के लिए कहा था। मूसा ने जमीन पर लाठी को डाला और वह एक साँप बन गई, और जब उसने साँप की पूंछ को पकड़ा तो फिर से वो एक छड़ी में वापस बदल गई। इसके बाद उसने अपना हाथ छाती पर रखर ढाँपा तो कोढ़ से आवृत हो गया। लेकिन जब उसने इसे दूसरी बार रखकर निकला, तब उसका हाथ बिल्कुल ठीक हो गया था। जब लोगों ने इन अद्भुत कार्यों को देखा तो वे परमेश्वर की शक्ति को देख सकते थे और यह भी समझ सकते थे कि मूसा वास्तव में परमेश्वर द्वारा भेजा गया है। लोगों की प्रतिक्रिया क्या थी? ***(निर्गमन 4: 29-31)*** 4. मूसा उत्साहित थे यह जानकार की कैसे परमेश्वर मिस्र में वापस लौटने के लिए उसका रास्ता तैयार कर रहे थे। इस कहानी में चित्रित उन लोगों की समीक्षा करें जिन्होंने परमेश्वर की योजना के अनुसार मूसा को आगे बढ़ने के लिए मददकार बने थे - यित्रो, हारून, नेताओं और भीड़। जो मूसा और हारून को अभी भी यह योजना किसके सामने पेश करना था। ज़ोर दो कि यह आसान नहीं होगा। उन्हें आगे के लिए अभी भी परमेश्वर पर भरोसा करना है।परमेश्वर का नियंत्रण सब पर था। **बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें**
सीखने	मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। ***निर्गमन 4:15*** सुनिश्चित करें कि बच्चे इस पद के संदर्भ को समझते हैं - मूसा और हारून का एक साथ काम करना और परमेश्वर का उनके साथ होना।
याद करने	**मूसा कि जीवन को संशोधित करने के लिए बच्चों से निम्नलिखित प्रश्न पूछें:** 1. मूसा के साथ कौन मिस्र वापस चला गया? 2. रास्ते से उन्हें कौन मिले? 3. लोग कैसे जानते थे कि मूसा को परमेश्वर ने भेजा था? 4. लोगों के सामने किए गए चमत्कारों में से किसी एक चमत्कार को समझाओ?

B10 कहानी 1

मूसा और पहली विपत्ति - यह कहानी परमेश्वर का आज्ञापालन करने के बारे में है।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. परमेश्वर के आदेशों को सुनना और पालन करना जरूरी है। 2. आदेशों को न सुनना और आज्ञा का उल्लंघन करने का परिणाम हमेशा दण्ड ही होगा। **मुख्य पद :** ***निर्गमन 7:16*** **बाइबल अनुभाग :** ***निर्गमन 7:1-24***
पहचान कराने	नियमों के पालन करने और नियमों का अवज्ञा करने की परिणामों के बारे में बच्चों से बात करें। आज की कहानी से संबंधित करने के लिए ए9 कहानी 4 में से कुछ सवाल पूछिए।
सिखाने	1. मूसा और हारून को फिरौन के पास जाकर इस्राएलियों को मुक्त करने के लिए अनुमति मांगने का वक्त आ गया था ताकि वे रेगिस्तान जाकर परमेस्वर के लिए पर्व कर सके। बच्चों से फिरौन कि प्रतिक्रिया का अनुमान लगाने के लिए कहें। उसका इनकार और परिणाम के बारें में व्याख्या करें और समझाएं की पहले की तुलना में चीजें अब और बदतर हो गए थे। बच्चों को समझाएं कि फिरौन परमेश्वर की अवज्ञा कर रहा था। यदि आप एक इस्राएली होते तो आप मूसा के बारे में क्या सोचेंगे? ***(निर्गमन 5:1-21)*** मूसा समझ नहीं पाया कि परमेश्वर ने ऐसा क्यों किया था। इसके बारे में उसने परमेश्वर से पूछा। परमेश्वर ने कहा की भले ही प्रारंभ में फिरौन परमेश्वर का आदेश का पालन नहीं करेगा, लेकिन परमेश्वर ने वादा किया कि वे उसे अपनी महान शक्ति दिखाऐंगे और आखरिकार फिरौन को आज्ञापालन करना ही पड़ेगा। बच्चों को याद दिलाना है कि हम वादे करते हैं और उन्हें भूल जाते हैं, या उन्हें पूरा नहीं कर सकते। लेकिन परमेश्वर हमेशा अपने वादों को पूरा करता है। 2. परमेश्वर ने उनसे फिरौन के पास वापस जाकर इस्राएली दासों को जाने देने की मांग करने के लिए कहा। ***(निर्गमन 5:22-7:5)*** 3. इस बार, फिरौन ने एक चमत्कार दिखने को कहा और हारून कि लाठी एक सांप बन गया।फिरौन के जादूगरों ने भी ऐसा ही किया, लेकिन हारून के सांप ने सभी जादूगरों के सांपों को खा लिया। यह परमेश्वर के बारे में क्या दर्शाता है? अभी भी फिरौन परमेश्वर के आज्ञा का पालन नहीं किया। ***(निर्गमन 7:6-12)*** 4. तब परमेश्वर ने मूसा और हारून को नील नदी के तट पर फिरौन से मिलने के लिए कहा। परमेश्वर का आदेश फिर से दिया गया और अगर फिरौन इस बार भी पालन नहीं किया तो नील नदी लहू बन जाएगी। और वहाँ कोई साफ पानी नहीं होगा एक सभी मछलियां मर जाएँगी। फिरौन ने सुनने से मना कर दिया। बाइबल कहता है कि वह मुँह फेर कर अपने घर चला गया। फिरौन के दृष्टिकोण पर चर्चा करें। समझाओ कि बाइबल बताता है की वह एक कठिन दिल वाला था। ***(निर्गमन 7:14-19)*** 5. इसलिए सभी मिस्रियों ने पानी पीने के लिए नदी के चारों ओर खोदना शुरू किया। क्योंकि वे नदी के पानी नहीं पी सकते थे। यह पहली विपत्ति थीजो 7 दिनों तक चली। ***(निर्गमन 7:24,25)*** 6. मूसा और हारून ने वही किया जो परमेश्वर ने उन्हें करने के लिए कहा था। हमें भी हमेशा यही करने कि प्रयास करना चाहिए। बाइबल कहता है कि हमारी आज्ञाकारिता से परमेश्वर प्रसन्न होता है। फिरौन ने परमेश्वर की आदेश का अवज्ञा किया और इसका परिणाम हमेशा मुसीबत और सजा ही होगा। उन चीजों पर चर्चा करें जो परमेश्वर हमारे दैनिक जीवन में करने के लिए हमें आज्ञा देते हैं। **बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें**
सीखने	**मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। निर्गमन 7:16**
याद करने	**कहानी को संशोधित करने के लिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें:** 1. मूसा और हारून के लिए परमेश्वर ने क्या वादा किया? 2. हारून का पहला चमत्कार क्या था? 3. पहली विपत्ति में नील नदी को क्या हुआ? 4. सात दिन तक मिस्र के लोगों को क्या नहीं मिला? 5. हमारे दैनिक जीवन में करने के लिए परमेश्वर हमें क्या आज्ञा देते हैं?

B10 कहानी 2

मूसा और आखिरी विपत्ति - यह कहानी इब्रनियों को बचाने का परमेश्वर की योजना के बारे में है।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. फिरौन और मिस्रियों को अवज्ञाकारी के लिए दंडित किया जाना होगा। 2. परमेश्वर पाप को अनदेखा नहीं कर सकता लेकिन वह उद्धार के लिए एक तरीका प्रदान करता है। **मुख्य पद :** ***निर्गमन 12:13*** **बाइबल अनुभाग :** ***निर्गमन 11:1-10, 12:1-13***
पहचान कराने	चर्चा करें की कैसे कुछ परिसथितियों में हमें सुरक्षित रखा जाता हैं। उन उदाहरणों का चुने जो बच्चों से संबंधित हैं। आज की कहानी में हम सीखते हैं कि परमेश्वर ने इस्राएलीयों को एक खास संकेत दिया था यह सुनिश्चित करने के लिए कि उन्हें विपत्ति से सुरक्षित रखा जाएंगे।
सिखाने	1. अब तक नौ विपत्तियां हुआ था, लेकिन हर बार फिरौन ने उन्हें जाने देने से इंकार कर दिया था। जब तक राजा फिरौन को परमेश्वर कि महत्त्व का एहसास नहीं हुआ, परमेश्वर उसके दिल को कठोर बना रहा था। 2. फिरौन ने मूसा को बताया कि वह उसे फिर से देखना नहीं चाहता था। ***(निर्गमन 10:27-29)*** लेकिन परमेश्वर ने मूसा को समझाया था कि आखिरी विपत्ति क्या होगा। वहाँ के हर परिवार में एक भयानक घट ना होने जा रहा था, हर परिवार का सबसे बड़ा बेटा मरने वाला था। ***(निर्गमन11:4-6)*** लेकिन फिरौन यह विश्वास नहीं किया कि परमेश्वर इस भयानक सजा उन पर आने देंगे। ***(निर्गमन 11:10)*** 3. हमें यह सीखना है कि परमेश्वर जो भी बाइबल में कहा है वह सच है। और जो कुछ उन्होंने वादा किया है, वह निभाएंगे। 4. परमेश्वर ने मूसा को उन तैयारीयों के बारें में विस्तार से समझाया जो मिस्र छोड़ने के लिए इस्राएलियों को करना था। हर एक परिवार एक मेम्ने को मारना था। कुछ खून उनके घर के दरवाजे के अलंगों पर लगाना था जो यह दिखाएगा कि वह घर इस्राएली का था। फिर उन्हें भुना मेमने, अख़मीरी रोटी और कड़वा सागपात का विशेष भोजन खाना था। उन्हें पूरी तैयारी के साथ शीघ्र निकलने के लिए जल्दी मेंभोजन खाना था। परमेश्वर ने बताया कि जब मिस्र के घरों के सबसे बड़े बेटे मारे जायेंगे, इस्राएलियों के दरवाजे पर खून होने पर वे सुरक्षित रहेंगे। उस वक्त कि उत्साह और प्रतीक्षा का वर्णन करें जब इस्राएलियों हर एक निर्देश का पालन करके आखिरखार मिस्र छोड़ने की तैयारीयां कर रहे थे। इस्राएलियों के लिए खून का मूल्य और महत्व पर चर्चा और कैसे यह उनके लिए एकमात्र सुरक्षा थी। 5. हमारे लिए परमेश्वर के काम करने के तरीकों को समझना हमेशा आसान नहीं है लेकिन हमें यकीन है कि वह हमेशा सबसे बेहतर जानता है। इस्राएलियों को कैसे सुरक्षित रखा गया? उसी तरह से,जो कोई विश्वास करता है कि प्रभु यीशु क्रूस पर हमारे पापों के लिए प्राण दिया है, वह अपने पापों कि सज़ा से बच जाता है। बाइबल बताती है कि प्रभु यीशु परमेश्वर का मेम्ना है। न सिर्फ इस्राएलियों के लिए, लेकिन हमारे सहित पूरे विश्व के लिए। जब हम यीशु के खून पर भरोसा करते हैं जो क्रूस पर मृत्यु के दौरान बहाया गया था, तो हम अपने पापों कि सजा से बचेंगे। **बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें**
सीखने	**मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। निर्गमन 12:13**
याद करने	**कहानी को संशोधित करने के लिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें:** 1. परमेश्वर की सजा के लिए इस्तेमाल किया गए दूसरा शब्द क्या है? 2. फिरौन के लिए अंतिम सजा क्या होगी? 3. सुरक्षित रहने के लिए इस्राएलियों को क्या सुनिश्चित करना था? 4. उन्हें क्या खाना था और कैसे खाना था? 5. प्रभु यीशु ने हमारे उद्धार के लिए क्या किया? (रोमियों 5:8)

B10 कहानी 3

मूसा और मिस्र से छुटकारा - यह कहानी भगवान की अद्भुत शक्ति के बारे में है।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. जैसे परमेश्वर ने जलती झाड़ी से मूसा का वादा किया था, उन्होंने इजरायलियों को बचाया। 2. बाइबल अक्सर इस घटना को परमेश्वर की शक्ति के सबसे महान उदाहरणों में से एक के रूप में संकेत करता है। मुख्यपद : ***निर्गमन 14:30*** **बाइबल अनुभाग : *निर्गमन 12:31-39, 14:1-31***
पहचान कराने	ऐसे कुछ चीजों के बारे में सोचें जो हमारे लिए करना असंभव है - विमान के बिना उड़ना, नाव के बिना समुद्र को पार करना, दिक्सूचक के बिना रेगिस्तान में अपना रास्ता खोजना आदि। लेकिन मनष्य से असंभव परमेश्वर को संभव है। वह इस कहानी में अपनी शक्ति के सबसे महान प्रदर्शनों में से एक दिखाने जा रहा था जो बाइबल में लिखा गया है।
सिखाने	1. रात के दौरान, जब सभी मिस्र के पहिलौठे पुत्र मर गए, फिरौन ने मूसा और हारून को बुलाया। पिछली विपत्ति के बाद फिरौन ने कैसे प्रतिक्रिया व्यक्त की थी?यह बताएं कि इस समय उसका प्रतिक्रिया अलग कैसे था? - उन्होंने सभी लोगों को अपने भेड़-बकरियों के साथ तरंत मिस्र छोड़ने का आदेश दिया। ***(निर्गमन 12:31,32)*** मिस्रियों ने भी उन्हें जाने के लिए कहा क्योंकि वे डरते थे कि यदि सभी वे और रुके, तो वह सब भी मरे जाएंगे। प्रभ ने मिस्रियों के मन को ऐसे बदला की वे इस्राएलियों को जाते वक्त चांदी, सोने और कपड़े देने पड़े। ***(निर्गमन 12:35,36)*** कुल मिलाकर, लाख से अधिक पुरुष, साथ और बच्चे भी थे। समझाएं कि भीड़ कितना बड़ा था। 2. आखिर में फिरौन ने परमेश्वर के आज्ञा का पालन किया! अगर वह पहली ही बार ऐसा किया होता तो वह अनेक विपत्ति से बच सकता था। बच्चों को माता-पिता, शिक्षक और सबसे महत्वपूर्ण परमेश्वर के लिए आज्ञाकारिता होने के महत्व समझाएं। 3. मूसा के नेतृत्व में इस्राएलियों ने लाल समुद्र की पार अपना रास्ता बना लिया। उनकी भावनाओं के बारें में चर्चा कीजिए। लेकिन यह आखिरी बार नहीं होगा जब वे फिरौन को देख रहे थे। फिर एक भार और परमेश्वर ने फिरौन के दिल को कठोर किया। क्योंकि उसे अब भी परमेश्वर के महत्त्व को देखना बाकी था। फिरौन अचानक एहसास हुआ कि वह अपने सभी दास को खो दिया था, और उसने 600 रथों के साथ इस्राएलियों को पीछा किया। ***(निर्गमन14:3-7)*** 4. इस्राएलियों अब बिल्कल फंस गए थे! फिरौन उनके पीछे था और उनके सामने लाल समुद्र था। अब उनके मन में क्या चल रहा होगा। वर्णन करें की कैसे वे घबराह गए और कैसे उन्होंने मूसा को दोषी ठहराया। लेकिन मूसा ने उन्हें स्थिर होकर खड़े होने के लिए कहा क्योंकि वे परमेश्वर का उद्धार देखने जा रहे थे। ***(निर्गमन 14:10-14)*** 5. परमेश्वर ने मूसा से समुद्र के ऊपर अपने लाठी को बढ़ाने के लिए कहा। मूसा ने वैसे किया और एक चमत्कारिक रूप से लाल समुद्र के पानी दो भाग हो गया और बीच में एक सूखा रास्ता प्रकट हुआ। और सारे इस्राएलियों सूखी भूमि से चलकर समुद्र पार किया। 6. समझाओ कि जब मिस्रियों ने उनका पीछे करने की कोशिश किया तो क्या हुआ। मूसा ने फिर से अपने लाठी उठाया और पानी वापस आ गया। बाइबल कहता है कि फिरौन के पूरे सेना समुद्र के पानी में डूब गया। ***(निर्गमन14:28)*** अगर आप एक इस्राएली हो तो परमेश्वर की महान शक्ति के प्रति प्रतिक्रिया का वर्णन करें - वे परमेश्वर से डरते थे और वे परमेश्वर और मूसा पर भरोसा रखा। ***(निर्गमन14:31)*** 7. हम सीख सकते हैं कि हम प्रभ के महान शक्ति पर भरोसा कर सकते हैं। इस्राएलियों की तरह हमे भी परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए और फिर हम कह सकते हैं, 'प्रभु ने मुझे बचा लिया!' **बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें**
सीखने	जैसे परमेश्वर ने जलती झाड़ी से मूसा का वादा किया था, उन्होंने इजरायलियों को बचाया। मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। ***निर्गमन 14:30***
याद करने	**कहानी को संशोधित करने के लिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें:** 1. फिरौन ने इस्राएलियों को जाने देने का फैसला क्यों किया? 2. मिस्रियों ने उन्हें क्या दिया? 3. फिरौन ने उनका पीछा करने का फैसला क्यों किया? 4. इस्त्राएलियों घबराया हुए क्यों थे? 5. परमेश्वर ने मूसा को उन्हें बचाने के लिए क्या करने को कहा? 6. मिस्र की सेना को क्या हुआ? 7. जब इजरायलियों ने देखा कि क्या हुआ था तब उन्होंने क्या किया?

B10 कहानी 4

मूसा और इस्राएल परमेश्वर को धन्यवाद देते है - यह कहानी परमेश्वर की प्रशंसा करने के बारे में है।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. उन्हें स्वतंत्रता और सुरक्षा देने के लिए सभी इस्राएली परमेश्वर के लिए आभारी थे। 2. हम को थोड़ा रुककर हमारे जीवन में पीछे देखने की जरूरत है, और हमारे लिए परमेश्वर ने जो भी किया है उसके लिए उनको धन्यवाद देना चाहिए। **मुख्य पद :** ***भजन संहिता 106:1*** **बाइबल अनुभाग :** ***निर्गमन 15:1-22***
पहचान कराने	बाइबल दिनों में हुई और कुछ अद्भुत चीजों को याद करें - दानिय्येल को सिंहों की माँद से बचानाम, दाऊदका गोलियत को मारना, लाल समुद्र के पार करना, ये बताते हैं कि उन्हें परमेश्वर की महान शक्ति पर भरोसा करने के आलावा वे और कुछ नहीं कर सकते थे। हम इस बात के बारे में पता करेंगे कि परमेश्वर ने उन्हें बचाने के बाद क्या किया था। और यह भी सोचें कि परमेश्वर ने जो कुछ भी हमारे लिए किया उसके प्रति हमें परमेश्वर को कैसे प्रतिक्रिया देनी चाहिए।
सिखाने	1. इस्राएल आखिरकार गुलामों से मुक्त थे और उनके दुश्मनों भी डूब गए थे। उन्हें पता था कि परमेश्वर ने उन्हें बचाया था। और वे बहुत आभारी थे और वे परमेश्वर की प्रशंसा करना चाहता था। ***(निर्गमन15:1)*** इस्राएली ने परमेश्वर की महानता को समझा और वे उनकी महिमा के प्रशंसा में गाना गाया क्योंकि वे जानते थे कि कोई अन्य देवता उनके तुल्य नहीं था। ***(निर्गमन15:11)*** 2. बच्चों को यह समझना चाहिए कि परमेश्वर कितना महान है। हम उसकी सृष्टि में, हमारे हर रोज़ की जरूरतों के लिए परमेश्वर के प्रावधान में और अपने पुत्र को क्रूस पर मरने हमारे लिए भेजने उसके प्यार में भी उनकी महानता हम देख सकते है। 3. इस्राएलियों केवल परमेश्वर के बारे में सिर्फ ऐसे ही एक गाना नहीं गाया, उसे प्रभु के साथ एक करीबी रिश्ता था, इसलिए वे उन्हें 'मेरा परमेश्वर', 'मेरा बल' और 'मेरा उद्धार' कह कर पुकारा। ***(निर्गमन15:2)*** 4. बच्चों से पूछो कि क्या वे सिर्फ परमेश्वर के बारे में जानते हैं, या यदि वे उसे अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में भी जानते हैं। 5. इज़राइली सिर्फ वर्तमान के बारे में नहीं सोच रहे थे, वे जानते थे कि भविष्य में प्रतिश्रुत देश की और उनके यात्रा के दौरान दूसरे दुश्मनों से होने वाले युद्ध में भी वे परमेश्वर पर भरोसा कर सकते थे। हम सीखते हैं कि प्रभु कभी भी बदलता नहीं और हम केवल वर्तमान में ही नहीं लेकिन भविष्य में भी उन पर भरोसा कर सकते है। 6. मरियम, हारून की बहन ने गाने और नाचने में कुछ महिलाओं का नेतृत्व किया। वे उन सभी के लिए उत्साहित थे जो उनके लिए परमेश्वर ने किया था। **बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें**
सीखने	मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। ***भजन संहिता 106:1*** यह पद हमें परमेश्वर के लिए धन्यवाद देने के बारे में याद दिलाता है। इसलिए बच्चों को हमेशा कृतज्ञता भरे प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित करें।
याद करने	**कहानी को संशोधित करने के लिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें:** 1. इस्राएलियों ने क्या किया जब उन्होंने देखा कि वे स्वतंत्र थे? 2. वे अपने गीत में परमेश्वर का वर्णन कैसे किया? 3. आप कैसे जानते हैं कि भविष्य के लिए भी इस्राएलियों ने परमेश्वर पर भरोसा किया? 4. जिसने गाना और नृत्य में महिलाओं का नेतृत्व किया? 5. इस्राएलियों डरे हुए हने से परमेश्वर की स्तुति करके गाना गाने में कैसे बदले?

B11 कहानी 1

परमेश्वर भोजन देता है - यह कहानी परमेश्वर इस्राएलियों के लिए भोजन प्रदान करने के बारे में हैं

	हम सीख रहे हैं कि: 1. परमेश्वर ने इस्राएलियों को चालीस साल केलिए रेगिस्तान में भोजन प्रदान किया। 2. प्रभु यीशु 'जीवन की रोटी' है और वह हमारी जरूरतों को पूरा करता है। **मुख्य पद :** ***यूहन्ना 6:35*** **बाइबल अनुभाग :** ***निर्गमन 16:1-32***
पहचान कराने	परमेश्वर ने मिस्र से इस्राएलियों को बचाकर उन्हें अपनी शक्ति दिखाया था। और अब उन्हें एक नए देश में ले जाने का वादा किया। यात्रा की कुछ दिनों बाद इस्राएलियों ने भूख के कारण मूसा के विरुद्ध शिकायत करने लगी। उनके भोजन की सामग्री समाप्त हो गई थी और वे मिस्र में मिली सभी खाद्य पदार्थों के बारे में सोच रहे थे। ***(निर्गमन 16:2,3)*** वे भूल गए थे कि परमेश्वर सब के नियंत्रण में थे और वे यात्रा के लिए उनकी सभी जरूरतों को जानता था। बच्चों को समझाएं की शिकायत करना अच्छी बात नहीं है। परमेश्वर चाहता है की हम हमेशा कृतज्ञ रहे।
सिखाने	1. भले ही लोग परमेश्वर पर भरोसा नहीं किया, परमेश्वर ने दिखाया कि वह अभी भी उनका परवाह करते है। परमेश्वर का एक योजना था जिससे इस्राएलियों को हमेशा भोजन मिल सकें। वह स्वर्ग से रोटी भेजेगें। इस्राएलियों हर सुबह उसे इकट्ठा करेंगे और सप्ताह के छठे दिन, उन्हें सब्त के दिन के लिए दुगुनी मात्रा में इकट्ठा करेंगे। और हर शाम परमेश्वर मांस प्रदान करेंगे ***(निर्गमन 16:4-12)*** 2. कल्पना करें कि कैसे इस्राएलियों सुबह अपने तंबू से बाहर निकलते हैं और कैसे प्रतिक्रिया करते है। मूसा ने बताया कि यह रोटी प्रभु ने उन्हें दी थी। हर कोई अपने तम्बू में रहने वाले लोगों के लिए पर्याप्त इकट्ठा करना था। कोई भी अगले दिन के लिए इकट्ठा नहीं करेंगे। हालांकि, कुछ लोगों इसे अगले दिन रखने की कोशिश की, लेकिन उस पर कीड़ा पद गए। ***(निर्गमन 16:15-20)*** बच्चों को अपनी इच्छानुसार चीज़ें करने के बजाय परमेश्वर के निर्देशनुसार कार्यों को करने का महत्व समझाएं। 3. लोगों ने स्वर्ग से दी गई रोटी को 'मन्ना' कहा। इसका स्वाद शहद की तरह था। परमेश्वर ने इस्राएलियों को उनके यात्रा के अंत तक मन्ना भेजता रहा। इससे परमेश्वर ने साबित किया की वे उनकी देखभाल करेंगे। ***(निर्गमन 16:31)*** 4. हमारी कहानी में, इस्राएलियों को अपनी भूख को संतुष्ट करने से पहले मन्ना को इकट्ठा करके खाने की जरूरत थी। यह रेगिस्तान में हर दिन उन्हें जीवित रखा, लेकिन उन्हें हमेशा अधिक मन्ना की आवश्यकता होती थी। 5. कई साल बाद, यीशु हमारे पापों के लिए मरने के लिए स्वर्ग से आया। उसने खुद को 'जीवन की रोटी' कहा। यदि हम अपने जीवन में प्रभु यीशु को प्राप्त करते हैं वह हमें अनन्त जीवन देता है - जीवन जिसका आनंद हम यहाँ और स्वर्ग में भी ले सकते हैं। स्वर्ग से मन्ना इस्राएलियों के लिए एक अद्भुत चमत्कार था। लेकिन प्रभु यीशु को प्राप्त करने से हम उससे भी ज्यादा कुछ प्राप्त किया है। **बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें**
सीखने	**मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। यूहन्ना 6:35**
याद करने	**कहानी को संशोधित करने के लिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें:** 1. लोगों ने किस लिए बड़बड़ाया? 2. वे किससे शिकायत की थी? 3. शिकायत करने के बजाय उन्हें क्या करना चाहिए था? 4. हफ्ते में मन्ना जमीन पर कितने दिनों आए? 5. शाम को उसे क्या मिला? 6. कितने साल तक वे मन्ना इक्कट्ठा किया? 7. यीशु ने अपने आप को क्या नाम दिया? 8. मन्ना की तुलना में यीशु कैसे महान है?

B11 कहानी 2

परमेश्वर विजय देता है - यह कहानी परमेश्वर अपने ऊपर भरोसा करने वाले लोगों का मदद करने के बारें में हैं।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. परमेश्वर ने इस्राएलियों की मदद की जब वे उस पर निर्भर थे। 2. परमेश्वर चाहता है कि हम उससे प्रार्थना करें ताकि हम जीवन में विजय प्राप्त कर सकें। **मुख्य पद :** ***निर्गमन 17:15*** **बाइबल अनुभाग :** ***निर्गमन 17: 8-15***
पहचान कराने	जल्द ही इस्राएलियों को एक और समस्या का सामना करना पड़ा, एक दुश्मन सेना, अमालेकियों ने उन पर हमला करना शुरू कर दिया। (निर्गमन 17:8) इस्राएलियों को क्या करना होगा? क्या वे जंग लड़ने से परिचित थे? बच्चों को याद दिलावो की मिस्र में वे सैनिक नहीं थे गुलाम थे। वे कैसे महसूस करें होंगे?
सिखाने	1. क्या वे परमेश्वर की मदद पर भरोसा कर सकते हैं? बच्चों को स्मरण दिलाना है कि परमेश्वर ने उन्हें मिस्र से बाहर लाया था ताकि उन्हें एक नए देश में लाया जा सके। वे अपना वादा पूरा करेंगे। 2. मूसा एक समझदार नेता था और उन्हें पता था कि क्या करना है। उसने अपने सहायक यहोशू से एक सेना का चुनाव करने के लिए कहा। मूसा जानते थे कि सेना को परमेश्वर की मदद की आवश्यकता होगी। । इसलिए वह हारून और हूर के साथ पहाड़ी के चोटी पर जाकर खड़े हो गए। मूसा कर्मचारियों के मदद से परमेश्वर की लाठी दोनों हाथ में लेकर सिर के ऊपर पकड़ा रहा। समझाओ कि यह दिखा रहा था की इस्राएली अपने जीत के लिए परमेश्वर पर भरोसा कर रहे थे। ***(निर्गमन 17:9)*** 3. जब तक मूसा ने ऐसा किया, तब तक इस्राएली जीत रहे थे। बच्चों से अपने हाथ को अपने सिर के ऊपर रखने के लिए कहें। यदि इस तरह लंबे समय तक आप हाथ को उठाया रखेंगे तो हाथों को क्या होगा? जल्द ही मूसा के हाथ थक गए और उन्होंने उन्हें नीचे किया। तब दुश्मन जीतने लगे बच्चों से यह पूछें कि हारून और हूर ने किस प्रकार मूसा की मदद की और स्पष्ट करो की उन्होंने यह कैसे किया। फिर मूसा सूर्यास्त होने तक अपनी हाथो को ऊपर पकड़ा रखा। और उस समय में इस्राएली जीत गए। मूसा परमेश्वर को जीत के लिए धन्यवाद देना चाहता था इसलिए उसने पत्थर की एक वेदी बनाई और उसका नाम 'यहोवा निस्सी' रखा। समझाओ कि मूसा चाहता था की जीत कि सारा सम्मान परमेश्वर को ही मिले। ***(निर्गमन 17:10-13,15)*** 4. लड़ाई जीतने में सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा किसका था? यहोशू और सैनिकों ने इस लड़ाई को जीता नहीं होता अगर मूसा ने अपना हाथ परमेश्वर पर भरोसा करके अपना हाथ उठाया रखा नहीं होता। अगर हम प्रभु यीशु में हमारे उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास करते हैं तो हमारे भी एक दुश्मन है- शैतान। वह हमें डराने और हमारे जीवन में खुशी को दूर करना चाहता है। अधिक शक्तिशाली कौन है - प्रभु यीशु या शैतान? हम जीत हासिल कर सकते हैं क्योंकि यीशु शक्तिमान है। हमें उस पर हर समय निर्भर करने की जरूरत है। **बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें**
सीखने	**मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। निर्गमन 17:15**
याद करने	**कहानी को संशोधित करने के लिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें:** 1. इस्राएलियों की सेना का नेता कौन था? 2. मूसा कहां गया था? 3. मूसा के साथ कौन गया था? 4. मूसा अपने हाथ ऊपर रकने से युद्ध में क्या हुआ? 5. मूसा ने कितनी देर तक अपनी हाथों को ऊपर उठाया रखा? 6. जीत किसने दिया?

B11 कहानी 3

परमेश्वर आज्ञाएँ देता है - यह कहानी परमेश्वर के नियमों के बारे में है

	हम सीख रहे हैं कि: 1. परमेश्वर पवित्र है। 2. हम परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने में असमर्थ हैं। **मुख्य पद :** ***निर्गमन 20:1 रोमियों 3:23*** **बाइबल अनुभाग :** ***निर्गमन 19-20***
पहचान कराने	आपके घर या स्कूल में मौजूद नियमों के बारे में बात करें। वे क्या हैं? नियम क्यों रखा गया हैं? क्या नियमों का पालन करना हमेशा आसान होता है? आज की कहानी में हम इस बात के बारे में सीखेंगे कि परमेश्वर ने इस्राएलियों को अपने नियम कैसे दिए।
सिखाने	1. इस्राएली सीनै पर्वत के पास पहुंचे जहाँ उन्होंने डेरे खड़े किए। परमेश्वर ने मूसा को समझाया कि वह बादल के अंधियारे में होकर पहाड़ की चोटी पर उतर आएंगे। वह पहाड़ के निचले भाग के आसपास बाड़ा बाँधना था ताकि लोगों में से कोई भी चढ़ने की कोशिश न करे। हालांकि लोगों ने खुद को धोया और तैयार किया था, उनके पाप के कारण वेपरमेश्वर के करीब नहीं आ सकते थे। ***(निर्गमन 19:1-14)*** 2. तीन दिन बाद लोग पहाड़ की चोटी पर खड़े थे। पर्वत धूएँ से भर गया और काँपने लगा। समझाओ कि यह लोगों को दिखाया की परमेश्वर कितना शक्तिशाली है। 3. विचार करें की लोगों ने कैसे महसूस किया होगा। फिर परमेश्वर ने मूसा को ऊपर आने के लिए कहा और दूसरी बार उन्होंने लोगों को नीचे रहने के लिए चेतावनी देने के लिए कहा ***(निर्गमन 19:16-22)*** समझाओ कि लोग अपने पाप के कारण पवित्र परमेश्वर के पास नहीं जा सकते है। जब तक हमारे पापों को माफ नहीं किया जाता है, पाप हमें परमेश्वर से अलग करेंगे । 4. बाद में, मूसा को परमेश्वर से पत्थरों के दो पटियो पर लिखा दस आज्ञाएं प्राप्त हुईं। आज्ञाएं परमेश्वर के नियमों या कानून है, जो यह स्पष्ट करता है की कैसे परमेश्वर उम्मीद करता है की लोग व्यवहार करें। परमेश्वर चाहता है की लोग उन्हें सबसे ज्यादा प्यार करें और वे एक-दूसरे से भी प्यार करें। ***(निर्गमन 20)*** 5. दुख की बात यह है कि इस्राएलियों परमेश्वर के नियमों को नहीं निबाह नहीं सकते थे और न ही हम भी नहीं।कोई भी परमेश्वर की उम्मीद तक नहीं पहुँच पाए हैं। प्रभु यीशु ही एकमात्र व्यक्ति है जो पृथ्वी पर एक निर्दोष जीवन जिया है। इसलिए सिर्फ वह ही हमारे उद्धारकर्ता बनने के लिए योग्य है। वह हमारे पापों की सज़ा अपने ऊपर लेने के लिए अपना प्राण दिया ताकि परमेश्वर हमें क्षमा करें और हम परमेश्वर के परिवार का सदस्य बन सके। **बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें**
सीखने	**मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। निर्गमन 20:1 रोमियों 3:23**
याद करने	**बच्चों को एक चार्ट पर दस आज्ञाओं को लिखने के लिए कहें और उनको ज़ोर से पढ़ने के लिए कहें।**

B11 कहानी 4

परमेश्वर उद्धार देता है - यह कहानी मौत से लोगों को बचाने के परमेश्वर का तरीके के बारे में है।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. परमेश्वर ने इस्राएलियों को योग्य सजा से बचने के लिए एक रास्ता प्रदान किया। 2. परमेश्वर हमें उद्धार दिलाने के लिए भी एक रास्ता प्रदान किया है। **मुख्यपद : यूहन्ना 3:14** **बाइबल अनुभाग :** ***गिनती 21: 4-9***
पहचान कराने	कभी-कभी हम एक ही गलती को दोहराते हैं। क्या आप याद कर सकते हैं कि इस्राएलियों ने क्या किया जब मिस्र से लाए भोजन खतम हो गया था? वे गड़बड़ और शिकायत करने लगे। और आज की कहानी में वे फिर से भड़के हैं। साँप का काटने के खतरे के बारे में बात करें। तुरंत ही अस्पताल जाकर दवा लेने की जरूरत है। आज की कहानी में परमेश्वर को साँप काटने वाले लोगों के लिए बहुत ही अलग इलाज था।
सिखाने	1. दुख की बात है कि इस्राएलियों ने मूसा और परमेश्वर के खिलाफ बात की यह कह कर कि चीजें मिस्र में बेहतर थीं। और यह कि वे परमेश्वर से प्रदान किए मान्ना से नफरत करते थे। वे कैसे अकृतज्ञ थे! ***(गिनती 21:5)*** 2. इस बार परमेश्वर उनसे नाराज हो गए और उन्हें सज़ा देने का फैसला किया। जल्द ही छावनी पर जहरीला सांपों ने हमला किया। लोगों के साथ क्या होगा? लोगों का सांपों ने काटा लिया और उनमें से कई मर गए। लोगों को पता चला कि यह उनकी गलती के कारण हुई थी। वे मूसा में पास गए और कहा कि उन्होंने पाप किया है और परमेश्वर से प्रार्थना कर के सांप को दूर करने के लिए मूसा से विनती की। ***(गिनती 21:6,7)*** बच्चों को यह याद करने में मदद करें कि यह सही मनोभाव है। जब हमने गलतियां करते है, हमें अपने पाप को स्वीकार करने और हमारी मदद करने के लिए परमेश्वर से पूछने की ज़रूरत है। 3. जब मूसा ने प्रार्थना की परमेश्वर ने मूसा से एक अनोखा कार्य करने के लिए कहा। उसे पीतल से एक साँप बनाकर छावनी के बीच में एक खम्भे पर लटकाना था। चमकीले पीतल हर किसी के निगाह में था। परमेश्वर ने वादा किया कि साँप से डसे हुए में से जिस ने भी खम्भे पर पीतल की सांप को देखा वह जीवित बच जायेगा। हर कोई जो परमेश्वर के आदेश पर विश्वास करके उसका पालन किया वे जीवित रहे। यह मौत से बचने का कितना आसान तरीका था ! ***(गिनती 21:8,9)*** 4. कुछ साल बाद जब यीशु पृथ्वी पर था उन्होंने एक महत्वपूर्ण सबक सिखाने के लिए इस कहानी का इस्तेमाल किया। हम भी इस्राएलियों की तरह हैं, क्योंकि हम परमेश्वर के खिलाफ पाप किया है और हमारे पापों को दंडित किया जाएगा। लेकिन परमेश्वर ने हमें हमारे पापों के लिए दंड से बचने का एक तरीका प्रदान किया है। यीशु ने बताया कि जब वह हमारे पापों के लिए अपना प्राण देगा तो उसे भी 'ऊँचे पर चढ़ाया जाएगा जब हम परमेश्वर पर भरोसा करते है तो परमेश्वर हमें उद्धार देकर हमें अनन्त जीवन देता है। बच्चों को समझाना की केवल यीशु ही हमे बचा सकता है, और बच्चों को इस पर प्रतिक्रिया देने की महत्त्व के बारें में जोर देना। **बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें**
सीखने	मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। ***यूहन्ना 3:14*** जिक्र करें कि ये यीशु के शब्द थे। उसने समझाया कि वह हमें उद्धार दिलाने के लिए कैसे सक्षम होगा जब उसे क्रूस पर चढ़ाया जाएगा।
याद करने	**कहानी को संशोधित करने के लिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें:** 1. इस बार इस्राएलियों का शिकायत क्या था? 2. परमेश्वर ने उन्हें कैसे सज़ा दिया? 3. साँप के काटने से लोगों को चंगा करने के लिए क्या करना था? 4. हम अपने पापों की सज़ा से कैसे बच सकते हैं?

B12 कहानी 1

यूसुफ और स्वर्गदूत - यह कहानी मुश्किल में भी परमेश्वर का आदेश का पालन करने वाले यूसुफ के बारे में है।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. यीशु नाम का मतलब 'उद्धारकर्ता' है। 2. यूसुफ की तरह, हमें हमेशा परमेश्वर की आज्ञा मानना चाहिए। **मुख्य पद :** ***मत्ती 1:21*** **बाइबल अनुभाग :** ***मत्ती 1:18-25***
पहचान कराने	नामों के बारे में बात करें। बच्चों से पूछें की अगर वे जानते हैं कि उनके नाम का अर्थ क्या है? या उन्हें उनका नाम क्यों दिया गया? समझाओ कि आज बच्चे बाइबल की एक विशेष बच्चे के बारे में सीखेंगे। जिन्हे एक बहुत खास नाम दिया गया था। बच्चों को यह अनुमान लगाने को कहो कि यह किसकी कहानी होगी।
सिखाने	1. यूसुफ और मरियम शादी करने की योजना बना रहे थे, लेकिन एक दिन मरियम ने यूसुफ को बताया कि वह एक बच्चा की प्रतीक्षा कर रही थी। यूसुफ को पता था कि बच्चे का पिता वह नहीं था, इसलिए उन्होंने रिश्ते को त्याग देने का विचार किया। ***(मत्ती1:18,19)*** 2. एक रात यूसुफ ने एक देखा। एक स्वर्गदूत स्वप्न में उनसे कहा, 'अपनी पत्नी मरियम को अपने यहाँ ले आने से मत डर, क्योंकि जो उसके गर्भ में हैं,वह पवित्र आत्मा की ओर से हैं' ***(मत्ती 1:20)*** बच्चों को समझाओ कि इसका मतलब है कि बच्चा परमेश्वर का पुत्र होगा। 3. स्वर्गदूत ने यूसुफ को बताया कि बच्चे का नाम यीशु रकना है। क्योंकि वह लोगों को अपने पापों से उद्धार दिलाएगा। ***(मत्ती 1:2)*** समझाओ कि यीशु नाम का मतलब उद्धारकर्ता है। चर्चा करें की एक उद्धारकर्ता कौन है। बच्चों से पूछिए कि हमें एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता क्यों है? बच्चों से पूछो कि यीशु हमारे उद्धारकर्ता बनने के लिए क्या किया? वह स्वर्ग से आया और हमारे लिए क्रूस पर अपना प्राण दिया। 4. जब यूसुफ अपने सपने से जाग उठा, उसने वैसा ही किया जैसे उनसे बताया गया था और उसने मरियम से शादी की। कुछ समय बाद बच्चा पैदा हुआ और यूसुफ ने उनका नाम यीशु रखा। ***(मत्ती 1:24,25)*** बच्चों से यूसुफ को दिए गए निर्देशों के बारे में पूछों और चर्चा करो की उन्होंने उनका पालन कैसे किया था। समझाओ कि बाइबल में दिए परमेश्वर के निर्देशों को सुनना और उसका अनुसरण करना हमारे लिए कितना महत्वपूर्ण है। चर्चा करे और उन कुछ निर्देशों की एक सूची बनाएं जिन्हें परमेश्वर ने हमें पालन करने के लिए दिया है। **बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें**
सीखने	**मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। मत्ती 1:21**
याद करने	**कहानी को संशोधित करने के लिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें:** 1. यूसुफ किससे शादी करने जा रहा था? 2. मरियम ने यूसुफ को क्या खबर दिया? 3. परमेश्वर ने यूसुफ से कैसे बात किया? 4. बच्चे के पिता कौन थे? 5. बच्चे को क्या नाम देना था? 6. 'यीशु' नाम का क्या मतलब है? 7. यूसुफ ने सपने से जागने के बाद क्या किया? 8. एक निर्देश के बारे में सोचो जो परमेश्वर ने हमें पालन करने के लिए दिया है।

B12 कहानी 2

ना पसंद भाई - यह कहानी भाइयों द्वारा यूसुफ का बेचा जाने के बारें में हैं।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. यीशु राजाओं का राजा है। 2. यीशु आराधना की योग्य है। **मुख्यपद :** ***मत्ती 2:2*** **बाइबल अनुभाग :** ***मत्ती 2:1-8***
पहचान कराने	बच्चों से सुप्रसिद्ध लोगों के बारे में सोचकर एक सूची बनाने के लिए कहे। चर्चा करें - क्या आप उन लोगों से मिलना चाहेंगे? अगर आप मिलते हैं तो आप क्या कहेंगे? उन्हें मिलने पर आपका व्यवहार कैसे होंगे?
सिखाने	1. बच्चों को बताओ कि आज हम कुछ ऐसे लोगों के बारे में सीखेंगे जो सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति को ढूंढ़ने के लिए एक यात्रा पर निकले थे। 2. एक नया सितारा आकाश में दिखाई दिया था। पूर्व ज्योतिषियों जानते थे कि यह एक नए राजा के जन्म का संकेत था। वे नए राजा की खोज के लिए यरूशलेम गए। वे राजा हेरोदेस के पास जाकर पुछा 'यहूदियों का राजा जिसका जन्म हुआ है, कहाँ है? क्योंकि हमने पूर्व में उसका तारा देखा है और उसको प्रणाम करने आए है' ***(मत्ती 2:1,2)*** बच्चों को समझाओ कि जो नया राजा पैदा हुआ था वह यीशु था। वह परमेश्वर का पुत्र है और अन्य राजाओं की तुलना में हमेशा सबसे महान रहेगा। यीशु राजाओं का राजा है। बच्चों से पूछिए कि क्या वे याद कर सकते हैं कि यीशु नाम का अर्थ क्या है? चर्चा करें की जब ज्योतिषियों ने कहा की वे राजा को प्रणाम करने चाहते है तो उनका क्या मतलब था। यीशु क्यों आराधना की योग्य है? 3. जब हेरोदेस ने एक नए राजा के बारे में सुना तो वह चिंतित हो गए। वह नहीं चाहता था कि कोई अन्य राजा उनका स्थान ले। उसने अपने कुछ ज्योतिषियों को बुलाया और उनसे पूछा कि नया राजा कहाँ पैदा हुआ था। उन्होंने शास्त्रों के माध्यम से खोज की और पता चला कि बच्चा बैतलहम नामक एक शहर में पैदा हुआ था। ***(मत्ती 2:3-6)*** 4. हेरोदेस ने ज्योतिषियों को उसके पास बुलाया और कहा, 'जाओ, उस बालक के विषय में ठीक ठीक मालूम करो, और जब वह मिल जाए तो मुझे समाचार को ताकि में भी आकर उस को प्रणाम करूँ।' ***(मत्ती 2:7,8)*** समझाओ कि हेरोदेस वास्तव में नए राजा की पूजा नहीं करना चाहता था, वह वास्तव में उसे मारना चाहता है। बच्चों से पूछिए कि उन्हें लगता है कि क्यों वो नए राजा को मारना चाहता था। समझाओ कि आज भी कई लोग यीशु महत्त्व नहीं देते, लेकिन परमेश्वर की इच्छा है कि ज्योतिषियों की तरह हम भी यीशु को प्यार और आराधना करें। **बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें**
सीखने	**मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। मत्ती 2:2**
याद करने	**कहानी को संशोधित करने के लिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें:** 1. आकाश में क्या दिखाई दिया? 2. ज्योतिषियों किस दिशा से आए थे? 3. वे नए राजा की तलाश में कहाँ गए थे? 4. उसने किस राजा से बाते की? 5. राजा हेरोदेस ने एक नए राजा के बारे में सुनकर कैसे महसूस किया? 6. किस शहर में राजा का जन्म होने वाला था? 7. हेरोदेस ने ज्योतिषियों को क्या करने के लिए कहा? 8. कौन अन्य राजाओ से महान हैं?

B12 कहानी 3

ज्योतिषियों और यीशु - यह कहानी ज्योतिषियों तारा का पीछा करते हुए यीशु को ढूँढने के बारे में है।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. ज्योतिषियों यीशु का प्रणाम किया और उन्हें बहुत खास उपहार दिए क्योंकि आज तक पैदा हुए बच्चों में से वे सबसे महत्वपूर्ण था। 2. हम परमेश्वर की आराधना करके धन्यवाद कहना चाहिए उन सभी चीजों के लिए जो वे हमारे लिए कर रहे हैं। और हमें वह काम करना है जो उन्हें पसंद हैं। **मुख्यपद :** ***मत्ती 2: 11*** **बाइबल अनुभाग :** ***मत्ती 2: 9-12***
पहचान कराने	चर्चा करे - आपको मिले सबसे कीमती उपहार क्या है? यदि आप एक नए बच्चे की यात्रा करने जा रहे थे तो आप उन्हें उपहार क्या लाएंगे।
सिखाने	1. बच्चों को समझाएं कि आज हम उन उपहारों के बारे में सीखेंगे जो ज्योतिषियों ने यीशु को दिए थे। बच्चों से यह भी पूछो कि उन्होंने पिछले कहानी में ज्योतिषियों के बारे में क्या सीखा था। 2. ज्योतिषियों ने हेरोदेस को छोड़कर अपने रास्ते पर चला गया। उन्होंने फिर से तारे को देखा और वह उन्हें उस जगह पर ले गया जहां यीशु था। तारे को देखकर ज्योतिषियों बहुत खुश और उत्साहित थे। ***(मत्ती 2:9,10)*** चर्चा करे - तारे को देखने पर ज्योतिषियों इतने उत्साहित क्यों थे? 3. ज्योतिषियों बैतलहम में उस घर पर पहुंचे जहां यूसुफ, मरियम और बच्चे थे। वे अंदर गए और जब उन्होंने यीशु को देखा तो वे मुँह के बल गिरे और उनको प्रणाम किया। उन्होंने उन्हें तीन उपहार दिए: सोना, लोबान और गन्धरस। ***(मत्ती 2:11)*** चर्चा करे - ज्योतिषियों ने इन उपहारों को यीशु को देने का फैसला क्यों किया? समझाओ कि भले ही ज्योतिषियों के जैसे उपहार नहीं दे सकते लेकिन हम उसे धन्यवाद दे सकते है और उनका आराधना कर सकते है और हमारे जीवन से उन्हें प्रसन्न कर सकते है। 4. कुछ समय बाद ज्योतिषियों को अपने घर वापस जाने का समय आ गया। हेरोदस ने उन्हें वापस आकर बच्चे की विषय के बारें में सब कुछ बताने के लिए कहा था। परन्तु परमेश्वर ने सपने में चेतावनी दी की उन्हें हेरोदेस के पास वापस जाना नहीं चाहिए। इसलिए वे घर अलग रास्ते से चले गए। ***(मत्ती 2:12)*** चर्चा करें - घर वापस जाते समय ज्योतिषियों की भावनाएं क्या थीं? घर वापस पहुंचने के बाद उन्होंने दूसरों को क्या बताया होगा? **बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें**
सीखने	**मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। मत्ती 2: 11**
याद करने	**कहानी को संशोधित करने के लिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें:** 1. ज्योतिषियों ने फिर से आकाश में क्या देखा? 2. जब उन्होंने तारे को देखा तो उन्हें कैसा लगा? 3. तारे ने उन्हें कहाँ ले कर गया? 4. घर में कौन थे? 5. जब ज्योतिषियों ने यीशु को देखा तब उन्होंने क्या किया? 6. उन्होंने उन्हें कितने उपहार दिए? 7. उन उपहारों का नाम बताएं। 8. ज्योतिषियों को एक अलग रास्ते से घर जाने के लिए कैसे पता था?

B12 कहानी 4

मिस्र देश को पलायन - यह कहानी परमेश्वर अपने पुत्र की देखभाल करने के बारे में है।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु की रक्षा की। 2. यीशु , मरियम और यूसुफ की तरह हम भी परमेश्वर को खुश करना चाहिए। **मुख्यपद :** ***मत्ती 2: 15*** **बाइबल अनुभाग :** ***मत्ती 2: 13-23***
पहचान कराने	बच्चों से उनके किसी भी एक सपने के बारे में पूछिए। बच्चों को याद दिलाए कि बाइबल के समय में सपनों को अक्सर विशेष अर्थ होते थे। यूसुफ और ज्योतिषियों के सपने के बारें में चर्चा करें। आज हम एक और सपने के बारे मं सीखने जा रहे हैं।
सिखाने	1. ज्योतिषियों के जाने के बाद यूसुफ ने एक और सपना देखा। सपने में परमेश्वर ने यूसुफ को बताया कि हेरोदेस इतना गुस्सा में था कि वह यीशु को ढूंढ़कर मारने की कोशिश कर रहा था। परमेश्वर ने जोसेफ को बताया कि उन्हें यीशु और मरियम लेकर मिस्र देश को बच के भाग जाना है, ताकि वे सुरक्षित रहें। ***(मत्ती 2:13)*** चर्चा करें - यह सपना देखने के बाद यूसुफ ने कैसे एहसास किया होगा? 2. फिर से यूसुफ ने आदेश का पालन किया और अपने परिवार को मिस्र में ले गया। और हेरोदेस के मरने तक वही रहा। ***(मत्ती2:14,15)*** चर्चा करें - क्या हुआ होगा अगर यूसुफ ने परमेश्वर की बात नहीं सुना होता? यह बहुत ही आवश्यक था की यूसुफ परमेश्वर की आदेश का पालन करें। बच्चों को बताओ की यीशु का जन्म के सैकड़ों साल पहले ही बाइबल ने उसके बारें में भविष्यवाणी की थी। परमेश्वर बहुत पहले ही जानता था कि हेरोदेस ऐसा करने की कोशिश करेगा। जो कुछ भी हुआ, इन सब में परमेश्वर अपने पुत्र की रक्षा कर रहे थे। 3. हेरोदेस के मरने में बाद यूसुफ, मरियम और यीशु वापस लौटे और नासरत नामक एक शहर में रहने लगे। ***(मत्ती2:19-23)*** बच्चों को बताएं कि जब यीशु नासरत में बढ़े को रहा था, वह हमेशा अपने परिवार, अपने पड़ोसियों और सबसे महत्वपूर्ण अपने पिता परमेश्वर को खुश करता था। परमेश्वर चाहता है की हम भी उन चीजों को करें जो उन्हें खुश करता है। उन्हें खुश करने के लिए सबसे अच्छी कार्य जो हम कर सकते हैं, वो है हमारे पापों से क्षमा माँगना और हमारे उद्धारकर्ता बनाकर यीशु को भेजने के लिए धन्यवाद देना। **बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें**
सीखने	**मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। मत्ती 2: 15**
याद करने	**कहानी को संशोधित करने के लिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें:** 1. ज्योतिषियों के छोड़ने के बाद यूसुफ का क्या हुआ? 2. परमेश्वर ने यूसुफ को कहाँ जाने के लिए कहा? 3. उसे वहां क्यों जाना है? 4. यूसुफ ने अपने साथ किसे लेकर मिस्र गए? 5. वे फिर वापस घर कब लौटे? 6. वे किस शहर में रहने लगे? 7. नासरत में बढ़े होते समय यीशु की प्रकृति कैसे था? 8. परमेश्वर को खुश करने के लिए हम क्या कर सकते

पाठ को अंकन करने शिक्षको केलिए मार्गदर्शन

लेवल 1 पाठ:

- हर हफ्ते एक/दो पन्ने को मुख्य रूप से रंग भरने या सवालों के जवाब देने।
- हर हफ्ते 10 अंक निर्धारित किए है और एक महीने में अधिकतम 40 अंक।
- लेवल 1 के बच्चों को अक्सर पढने में तकलिफ हो सकता है इसलिए हम चाहते है कि माता-पिता/ रक्षक/शिक्षक उनके सहायता करे।
- हम हर सवाल केलिए 2 अन्क निर्धारित किए है और शेष अन्क रंग भरने केलिए ऐक अध्याय केलिए 10 अन्क।

लेवल 2 पाठ:

- हर हफ्ते 4 पन्ने।
- कहानी पाठ में ही निहित है। बच्चों को पहेली सुलझाने, रंग भरने, मुख्य पद को पूरा करना है।
- 20 अन्क हर हफ्ते केलिए निर्धारित है और एक महीने केलिए अधिकतम 80 अन्क।

बाइबल टाइम के मार्किन्ग

निर्देश:

शिक्षक पहले:

- पाठ को जाँच कर चिन्हित करे।
- निर्देश अनुसार आवश्यक अन्क है।
- गलत जवाब के पास चिन्हित करे और सही जवाब भी लिखे।
- आन्शिक रूप से सही उत्तर केलिए एक अन्क दे।
- एक महीने के कुल अन्क के दिए हुए जगह में लिखो।

© Bible Educational Services 2020
www.besweb.com